अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज

वीर निर्वाण संवत् - 2546

संयुक्त अंक : इक्यावन-बावन

आषाढ़ शुक्ल, वि.सं. 2077, जून 2020

वर्ष : चौदह

आरोन में माघ शु. षष्ठी को आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी पंचम पदारोहण दिवस सोल्लास मनाते हुए भक्तगण।

आरोन नगर में आचार्य पदारोहण दिवस पर शास्त्रदान करते हुए भक्तगण।

आरोन नगर में प्रवचन के दौरान आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ।

आरोन में आचार्य पदारोहण दिवस पर गुरु-पाद-प्रक्षालन करते हुए भक्तगण।

शिवपुरी में जिनालय परिसर में आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ।

शिवपुरी में संग्रहालय का अवलोकन करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ।

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ।

रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-चौदह
अंक - इक्यावन-बावन

• परामर्शदाता •
प्राचार्य डॉ. शीतलचंद जैन, जयपुर
मो. 9414783707, 8505070927

। सम्पादक ।
डॉ. अजित कुमार जैन,
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
मो. : 7222963457, व्हाट्सएप: 9425601161
email : bhav.vigyan@gmail.com

• प्रबंध सम्पादक •
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी,
भोपाल मो. 9425011357

• सम्पादक मंडल •
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), इंदौर (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

• कविता संकलन •
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

• प्रकाशक •
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा
सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 मो.: 9479978084
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

• आजीवन सदस्यता शुल्क •

शिरोमणी संरक्षक	:	50,000 से अधिक
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3,100
आजीवन (स्थायी) सदस्यता	:	1,500

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. संपादकीय	- डॉ. अजित जैन	2
2. ज्वार के मोती	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	4
3. अजर अमर हूँ	- पं. लालचन्द्र जी 'राकेश'	10
4. पौराणिक संस्कृति	- श्री नाथूलालजी जैन शास्त्री	16
5. कोरोना / दिगम्बर	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	30
6. गम नहीं	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	31
7. निज	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	32
8. काश	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	33
9. जगत् शांति/ निज का ध्यानी	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	34
10. जिन	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	35
11. कृषि करो या../जिन से निज	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	36
12. खिले कमल/ श्रुत में रम	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	37
13. स्वाश्रित बन	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	38
14. अतिथि/ साधना प्रभावना	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	39
15. वर्षायोग कहाँ होगा	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	40
16. जिनेन्द्र प्रभु का दर्श अपने घर आओ	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	41
17. रहो अपने देश में मोक्ष मिले अरमान	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	42
18. वर्तमान में प्रचलित महामारी को रोकने में जैन सिद्धान्तों की उपयोगिता	- डॉ. सनत कुमार जैन	43
19. आर्जव गुरु यश गाथा	- संकेत बजाज (जैन)	47
20. आर्जव गुरु वंदना/ आर्जव गुरु कृपा	- अनिल जैन	48
21. समाचार		49

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

कोरोना वैश्विक महामारी

(नोवेल कोरोना-कोविड19)

विगत 7 माह से (लगभग दिसंबर 2019) कोरोना विषाणु ......, चीन के वुहान प्रांत से तेज बुखार, सूखी खांसी, सर्दी-जुकाम आदि लक्षणों सहित यह बीमारी शुरू हुई और पूरे विश्व में फैलकर एक महामारी का रूप ले लिया।

जापान के प्रोफेसर डॉ. टासुकू होंजो, नोबल पुरस्कार विजेता के अनुसार यह कोरोना वायरस प्राकृतिक नहीं है अपितु (आर्टीफीशियल) कृत्रिम है। यह वायरस उन जानवरों से आया है जो कि इस वायरस से संक्रमित थे। इस वायरस से मानवों के श्वासतंत्र संक्रमण की गहनता के कारण सर्दी जुकाम जैसे हल्के सामान्य लक्षण से अति गम्भीर स्थिति तेज बुखार, सूखी खांसी, श्वेत रक्तकणिकाओं की कमी, किडनी खराब आदि से मृत्यु तक हो सकती है। अतः (संक्रमण) रोग होने की स्थिति में लक्षण दिखने पर शासन/प्रशासन द्वारा स्वास्थ्य केन्द्रों पर जाकर तुरंत उपचार लेना चाहिए।

कोरोना वायरस के प्रारम्भिक बचाव के अंतर्गत रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता को बढ़ाने के लिए गर्म जल पीना है। साथ ही, अनेक आयुर्वेदिक काढ़ा चूर्ण उपलब्ध हैं। शरीर की मानसिक एवं शारीरिक फिटनेस रखने के लिए योगासन, अवश्य करें। इस मौके पर आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी के द्वारा रचित सम्यक्ध्यान शतक काव्य में जो पद्य स्मरणीय है उन्हें जीवन में अमलकर जीवन को स्वस्थ व ध्यान करने योग्य अवश्य बनावें।

नशा, आमिस कंद तज, निशि में छोड़ें भोज।
मर्यादित शोधित अशन, स्वस्थ ध्यान हो रोज॥
अशन राजसिक, तामसिक, जिसे छोड़ना श्रेष्ठ।
सात्विक, प्रासुक हो अशन, ध्यान बढ़े, वय जेष्ठ॥

भावना योग (प.पू. मुनिश्री 108 प्रमाणसागरजी महाराज द्वारा आरम्भ किया गया) आदि उपाय अपनाया जाना भी आवश्यक है। साथ ही, बचाव के लिए मुंह-नाक ढकने के लिए मास्क लगाना और सोशल डिस्टेंस (दो गज की दूरी) रखना अत्यंत आवश्यक है। कच्ची सब्जी व फलों को (इन्फेक्टेड) संक्रमित रोगी व्यक्ति के छूने से या नाखून गड़ा देने से यह किसी भी स्वस्थ्य व्यक्ति को रोगी बना सकता है। अतः सभी प्रकार के फल एवं सब्जियों को अच्छी तरह से गर्म पानी (नमक या खाने का सोड़ा, लाल दवाई-पोटेशियम परमेंग्नेट ($KMnO_4$) को पानी में घोलकर) से धोकर रखना चाहिए एवं अग्नि से पकाकर खाना उपयुक्त होगा।

इस कोरोना बीमारी के इन्फेक्शन के बचाव हेतु आचार्यश्री आर्जवसागरजी के मार्गदर्शानुसार कुछ आवश्यक निर्देशन के रूप में मुनि/आर्यिका संघों में जो भी स्वस्थ व्यक्ति चौका लगा रहे हें वे निम्न सावधानी पूर्वक व्यवस्था सुनिश्चित करें-

1. जो व्यक्ति ट्रेन, बस या टैक्सी ड्राइवर के साधन द्वारा संघ में जाते हैं उन्हें डॉक्टर से सलाह लेकर न्यूनतम सात दिन का क्वारनटाइन/आइसोलेशन (एकांत वास) का पालन करने के पश्चात् डॉक्टर से परीक्षण करवाकर ही संघ में दर्शन/चौके में जाना आवश्यक है। जहाँ तक संभव हो, वे यात्रा स्थगित रखें।

2. दुकान, ऑफिस, यात्रा और किसी भी सार्वजनिक स्थान के कपड़े बदलकर ही मंदिर/गुरु दर्शन करने जावें।
3. मुख एवं नाक को मास्क से ढक कर रखें।
4. गुरुदर्शन दो गज दूरी से करें। चरण नहीं छुएँ।
5. संक्रमण (वायरस इंफेक्शन) से बचने के लिए शारीरिक दूरी (दो गज) बना कर रखें।
6. स्नान एवं हाथ धोने के लिए गर्म जल का प्रयोग बेहतर है।
7. चौके में जाने से पूर्व बेसन और गर्म पानी/जल से हस्त शुद्धि करके सोला के वस्त्र पहिनें।
9. चौके में भीड़ नहीं करें और अनुमति लेकर ही प्रवेश करें।

यह भी देखने आया है कि कुछ व्यक्तियों को बिना किसी लक्षण के भी कोरोना वायरस का संक्रमण उत्पन्न हुआ है तथा उन संक्रमित व्यक्तियों के द्वारा अन्य स्वस्थ व्यक्तियों को कोरोना का संक्रमण फैला है। अतएव यह आवश्यक है कि शासन/प्रशासन के निर्देशों के अनुसार व्यक्तियों को अधिकतम समय घर पर सुरक्षित रहना, घर से बाहर जाने पर मुंह एवं नाक को मास्क के द्वारा ढकना और सोशल व फिजीकल डिस्टेंस के अन्तर्गत दो गज की दूरी बनाए रखने की आवश्यकता है।

विशेष तौर पर 10 वर्ष के कम आयु के बच्चों एवं 60 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों को विशेष सावधानी रखने तथा घर से बाहर निकलने के लिए सख्त मनाही की है। बार-बार हाथों को साबुन से अच्छी तरह धोने की सलाह सभी को दी जा रही हे। विशेष तौर पर आंख, मुँह और नाक को छूने से पूर्व/पहले अपने हाथों को साबुन से धो लें। सावधान रहें।

यदि आप चिंता एवं तनाव महसूस कर रहे हैं तो परिवार एवं दोस्तों से फोन, मोबाइल पर संपर्क में रहे, वीतराग की भक्ति पूर्वक सद्‌गुरु का प्रत्यक्ष या परोक्ष में आशीष भी लें। नियमित रूप से व्यायाम एवं ध्यान करें, पर्याप्त नींद लें, संतुलित आहार लें, सकारात्मक सोच रखें। कोरोना विषाणु का वैक्सीन अभी ट्रायल अवस्था में है। जैसे ही बाजार में उपलब्ध होगा तभी हम कोरोना संक्रमण से सुरक्षित हो सकेंगे। तब तक सावधान रहना श्रेष्ठ है।

डॉ. अजितकुमार जैन, सम्पादक

ध्यातव्य

सम्यग्ज्ञानभूषण एवं सिद्धान्तभूषण पदवी से सम्बन्धित आगम-अनुयोग प्रश्नोतरी इस कोरोना महामारी के काल में कुछ दिनों के लिए जो स्थगित थी अब आगे सितम्बर माह से प्रारम्भ हो जावेगी।

पुण्य अवसर

आचार्यश्री आर्जवसागरजी द्वारा रचित "**जैनागम संस्कार**" प्रश्नोत्तर रत्नमालिका का इंजी. शोभित जैन, दमोह द्वारा अंग्रेजी भाषा में अनुवादित होकर तैयार है, जिसके प्रकाशनार्थ आप अगर पुण्यार्जक बनना चाहते हैं तो आप अपनी भावना हेतु भाव विज्ञान पत्रिका के सम्पादक डॉ. अजित जैन या भ.महावीर आचरण संस्था समिति के किसी भी सदस्य से सम्पर्क अवश्य करें।

ज्वार के मोती

देवपद खेवपद की शिखरजी की यात्रा का वर्णन करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने अपने प्रवचनों में एक भक्ति का अतिशय बतलाते हुए कहा कि जैन धर्म अनादि से इस आर्यखण्ड में विद्यमान है। समय के रहते उसमें परिवर्तन आते हैं, जन समुदाय की विभिन्न प्रवृत्तियाँ होती रहती हैं। इसी भारत भूमि के मध्य भारत के काल में जैन धर्म का एक प्रसिद्ध क्षेत्र रहा है, जहां पर श्रावक बहुत धर्मप्रिय थे, उनका जीवन बहुत ही धर्ममय व सुखमय था। अधिकांश परिवार प्रात:काल की शुरुआत देवदर्शन से ही करते थे। यहाँ तक बच्चे भी वीतराग भगवान के दर्शन के बिना भोजन नहीं करते थे। मनुष्य जीवन में गृहस्थावस्था को चार भागों में विभाजित किया जाता है- किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था। प्रत्येक अवस्था के कार्य व प्राथमिकता अलग-अलग है। ऐसा देखा जाता है कि मनुष्य प्राय: प्रौढ़ अवस्था में धर्म की ओर आकर्षित होता है कोई अपनी-अपनी अवस्था के अनुरूप कार्य को बहुत रुचि से करते हैं इसी प्रकार धर्म मार्ग में प्रवेश भी प्रौढ़ अवस्था के मनुष्य ही पाते हैं। बहुत कम हैं जो युवावस्था/किशोरावस्था से ही धर्म की क्रियाओं में रुचि रखते हैं।

इस नगर में एक श्रेष्ठी रहते थे। वे शुरु से ही बहुत धर्मात्मा थे। अपने जीवन में उन्होंने बहुत तीर्थ यात्राएँ कीं। वे अपने परिवार में बहुत ही प्रिय थे। एक समय उनके मन में विचार आया कि उन्हें शाश्वत तीर्थ सम्मेदशशिखर की यात्रा करनी है। उस काल में तीर्थक्षेत्र की यात्रा बहुत दुर्लभ होती थी। प्राय: शिखरजी की यात्रा हर एक व्यक्ति नहीं कर पाता था।

आज तो शिखर जी की यात्रा बहुत आसान हो गई है, सभी सुविधाएँ उपलब्ध हो गई हैं। परंतु इस तरह की सुविधाएँ नहीं थीं। एक बार यात्रा के लिए निकले तो छह महीने सहज ही हो जाते थे। फिर घर में सूतक पातक लग जाये तो उन्हें पता ही नहीं चल पाता था। यहां तक तीर्थ यात्रा को निकले तो वापस घर आ पायेंगे यह भी कह पाना मुश्किल होता था। अत: एक बार यात्रा के लिए निकलें तो सभी प्रकार की तैयारी करते थे। उन श्रेष्ठी ने यात्रा की तैयारियाँ शुरू कर दी। यात्रा के लिये वाहन का चयन किया, सामग्री व्यवस्थित करवायी और साथ में कौन-कौन जायेगा यह निर्णय लिया। श्रेष्ठी के यहाँ दो भाई सेवक की तरह कार्यरत थे। श्रेष्ठी ने विचार किया कि क्यों न इन दोनों को साथ ले चलें, क्योंकि वे बहुत सद्‌विचार वाले थे व जैनधर्मी थे। एक दिन श्रेष्ठी ने उनसे कहा कि क्या आप लोग मेरे साथ सम्मेदशिखर की यात्रा को जायेंगे दोनों भाईयों ने विनय पूर्वक श्रेष्ठी से कहा कि हमें क्या करना होगा? श्रेष्ठी ने भी सहजता से कहा कि बस तुम्हें रास्ते में सामान रखना-उतारना आदि आवश्यक होगा और यात्रा के दौरान उचित पात्र मिलेंगे तो उनको आहारादि में सहयोग देना होगा। दोनों भाईयों ने विचार करते हुए कहा कि वैसे तो हम लोग अवश्य आपके साथ आयेंगे फिर भी हम अपनी वृद्ध माँ से चर्चा करने के बाद आपको उत्तर देंगे क्योंकि हम लोगों की अनुपस्थिति में उनकी सेवा करने वाला कोई नहीं होगा। श्रेष्ठी ने भी उनको सहमति देते हुये कहा कि हाँ! तुम अवश्य ही घर में बुजुर्गों से चर्चा करके बताना और परम सौभाग्य मत चूकना।

दोनों भाईयों ने घर जाकर अपनी माँ से विचार विमर्श करते हुए श्रेष्ठी के विचारों से अवगत कराया।

माँ ने भी तुरंत स्वीकृति देते हुये कहा कि हाँ। अवश्य शिखर जी की यात्र कर आओ। ऐसा अवसर फिर कब मिलेगा। दूसरे दिन उन्होंने स्वीकृति श्रेष्ठी को दे दी और यात्रा हेतु तैयारियाँ शुरु कर दी।

जिस दिन यात्रा प्रारंभ करनी थी उसी दिन दोनों भाईयों ने अपनी माँ से आशीर्वाद लिया। आशीर्वाद लेते हुए माँ से कहा कि माँ! आप तो बहुत ज्ञानी हैं हमें कुछ संदेश हमको दे दो। माँ बोली- मैं क्या उपदेश दूँ, तुम तो सबकुछ जानते हो। कोई बड़े ऋषि मुनि मिलेंगे तो उनसे सुन लेना। फिर भी आशीर्वाद स्वरूप में माँ से कुछ आवश्यक वचनों की पुनः प्रार्थना की। जो यात्रा में उनके लिये उपयोगी हों; माँ ने भी सहज रूप से कह दिया कि ''बेटा! देखभाल कर चलना'' उन्होंने कहा कि माँ ने इतना छोटा से उपदेश दिया। कोई बड़ा सा उपदेश दे देती तो अच्छा रहता। क्या हमको देखना नहीं आता, चलना नहीं आता। माँ कोई बड़ा सा उपदेश दे दो। माँ बोली बेटा! इसी में संतुष्ट रहो इसमें ही सबकुछ है। और इसका अर्थ ज्ञात नहीं होता तो महान मुनिराज से इसका मतलब पूँछ लेना। उन्होंने मां के वचनों का ध्यान रखा। इसके अलावा माँ ने परामर्श देते हुए कहा कि मेरे तरफ से यह एक थैली ले जाओ, जिसे सम्हाल कर रखना और शिखर जी तीर्थक्षेत्र की प्रत्येक वेदी पर अर्पण कर देना। ध्यान रखना यह किसी को मालूम नहीं होना चाहिए। दोनों बेटों ने हाँ की सहमति देते हुये माँ के चरण स्पर्श किए और यात्रा को निकल गये। दोनों भाईयों ने माँ के द्वारा दी हुई थैली को अपने सामान के साथ एक नियत स्थान पर रख दी ताकि सामान्य से किसी का ध्यान वहाँ न जा सके।

श्रेष्ठी घर के सभी सदस्यों और उन सेवकों को लेकर यात्रा को निकल गये। पहले यात्रा बैलगाड़ी आदि से होती थी और यात्रा सामान्य से दिन में ही किया करते थे। रात्रि में उचित स्थान देखकर विश्राम करते थे। फिर बीच रास्ते में वीतराग साधु मिल गये तो उनके दर्शन, प्रवचन, आहारादि, दानादि के निमित्त से यात्रा को कुछ दिनों का विराम देते थे। यात्रा के दौरान वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ एक विशाल मुनि-संघ था उनके चरणों में नमस्कार करके आशीर्वाद लेकर उनकी परिचर्या करके उनका उपदेश सुना और उपदेश सुनकर छोटे बड़े नियम लेने को सभी लोग इच्छुक हुये। उसी के बीच उन दोनों ने पूँछ लिया कि महाराज जी मेरी माँ ने हम दोनों को एक उपदेश दिया था। उस उपदेश का अर्थ हमको समझ नहीं आया आप हम पर कृपा कीजिए। महाराज बोले-बोलो कि तुम्हें क्या उपदेश मिला था। वे बोले कि उन्होंने उपदेश दिया था कि ''देखभाल कर चलना'' ऐसा कहा था; गुरुवर बोले कि इसमें बहुत गहरा अर्थ छिपा हुआ है। अरे! देखभाल कर चलना मतलब सारा मोक्षमार्ग ही आ गया। देख मतलब सम्यग्दर्शन, भाल मतलब सम्यग्ज्ञान और चलना मतलब सम्यक्चारित्र।

''सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः''

सारा का सारा मोक्षमार्ग ही बतला दिया। अब क्या बचा है तुम लोगों ने यदि इतना पालन कर लिया तो मुक्ति पाने में देर नहीं है। ठीक है महाराज जी! इसी प्रकार का हमें मोक्षमार्ग मिल जाये। उन्होंने अपने सम्यक्त्व को दृढ़ बनाया और अणुव्रत के साथ पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत भी ले लिया। इसी प्रकार श्रेष्ठी भी अपनी-तीर्थयात्रा करते हुए जगह-जगह पर वीतराग मुनियों का दर्शन, आहार दान करते हुए अपनी यात्रा को आगे बढ़ाते हुये

सातिशय पुण्यार्जन करते हुये एक दिन बड़ी ही प्रतीक्षा के साथ शुभ मुहूर्त्त में उस शिखरजी तीर्थक्षेत्र के पर्वत की तलहटी मधुवन में पहुँच गये। ज्यों ही वहाँ पहुँचे तो देखा कि पर्वत पर जिनालय बने हुये हैं, टोंक बनी हुई हैं। सबसे पहले तो उस टोंक का दर्शन हुआ जहाँ महान उपसर्ग विजेता पार्श्वनाथ तीर्थंकर मुक्ति पधारे। ऐसी टोंक का दर्शन हुआ और बोले– पार्श्वनाथ भगवान की जय। इस प्रकार ठहरने आदि की व्यवस्था बनाकर विश्राम करने चले गये। दूसरे दिन हेतु श्रेष्ठी ने पहाड़ पर जाने की व्यवस्था बनाई और सभी को भोजन की तैयारी के बारे में सूचना दे दी। और रात्रि के समय सभी सोने चले गये।

इन दोनों भाईयों के मन में विचार आया कि हम लोग कैसे पर्वत पर भगवन्तों के चरणों के दर्शन कर पायेंगे क्योंकि श्रेष्ठी के पर्वत यात्रा से वापिस आने के बाद भोजन व्यवस्था में भाग लेना होगा। इसके अलावा माँ के द्वारा दी हुई सामग्री कैसे अर्पण करेंगे वह भी गुप्त रूप से। उन्होंने विचार किया कि क्यों न हम लोग रात्रि में 12 बजे यहाँ से निकलें तो सभी कार्य यथावत् हो जायेंगे।

ऐसा सोचकर वे दोनों माँ के द्वारा दी गई सामग्री के साथ वन्दना के लिये निकल गये। यात्रा प्रारंभ करते समय वहाँ के कर्मचारियों ने देखा फिर विचार किया कि ये कहीं के कर्मचारी वर्ग के लोग होंगे इसलिए उनको ऐसे असमय में यात्रा के लिये रुकावट नहीं की। उधर दोनों भाई अपने–अपने वेग से पर्वत पर पहुंचने के लिये आतुर हो पड़े। झरने के गर्म जल में अपनी द्रव्य पोटरी खोलकर धोने लगे। चूँकि दाने हल्के होने से कुछ बह गये बहुत थोड़े ही बच पाये। इस प्रकार वे चाँदनी बिखरी रात्रि में ही गणधर टोंक पर पहुँच गये। वहाँ पहुँचने पर बहुत ही भक्तिभाव से पूजन की। जय जय कार लगाई कि धन्य हो जो कि हम इस पर्वत पर पहुँच गये। जहाँ से अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी बने हैं। जय जय कार लगाते हुए मंत्र पढ़ते चले जा रहे थे।

ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत परम सिद्धेभ्यो नमो नमः बोलकर आगे बढ़ते गये थे। और भावना भा रहे थे कि हमें भी ऐसे मुक्ति प्राप्त हो। इस तरह टोंकों पर पहुंचने पर माँ द्वारा दी हुई द्रव्य में से एक मुट्ठी द्रव्य अर्पण कर दी और इधर–उधर देख रहे थे कि कोई देख तो नहीं रहा है। अर्घ्य अर्पण कर कायोत्सर्ग किया। चरणों का प्रक्षाल कर गंधोदक लिया। फिर आगे की टोंक पर जाने हेतु निकल पड़े। इसके बाद पहली टोंक ज्ञानधर कूट जहाँ से 17 वें तीर्थंकर कुंथुनाथ भगवान व 96 कोड़ाकोड़ी 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार मुनि मोक्ष गये। वहाँ पहुँचे और प्रासुक सामग्री से अर्घ्य समर्पित करते हुये तीन परिक्रमा के बाद नमन कर दूसरी कुन्थुनाथ टोंक पर गये।

तीसरी टोंक नमिनाथ भगवान के चरणों में अर्घ्य चढ़ाते हुये तीन परिक्रमा के साथ आगे बढ़ गये। फिर चौथी टोंक अरनाथ पर पहुँचे। इसके बाद क्रम से मल्लिनाथ भगवान, श्रेयांशनाथ भगवान, पुष्पदंत भगवान, पद्म प्रभु भगवान, मुनिसुव्रतनाथ जहाँ से राम ने सिद्धचक्र विधान किया था। इस प्रकार दोनों भ्राता भव्य जीव वेदियों के दर्शन करते हुये उस थैली के एक–एक मुट्ठी धान्य अर्पण करते हुये शांत परिणामों से देखभाल कर चलते हुये भाव सहित पूरी वंदना करने में लगे रहे।

वहाँ से वंदना को दो मार्ग निकलते हैं उन्होंने विचार किया कि किस रास्ते से वंदना करें। क्योंकि एक रास्ता जो चन्द्राप्रभु भगवान की टोंक और दूसरा रास्ता सीधा जलमंदिर को जाता है। वे दोनों अकेले ही वंदना

कर रहे थे फिर भी रास्ता भूले नहीं और चन्द्राप्रभु भगवान की टोंक पर पहुँचकर भाव सहित तीन परिक्रमा देते हुए अपनी द्रव्य को अर्पित किया। वहाँ से आकर आदिनाथ भगवान, शीतलनाथ भगवान, अनंतनाथ भगवान, संभवनाथ भगवान, वासुपूज्य भगवान और अभिनंदननाथ भगवान की टोंक के दर्शन करते हुये जल मंदिर के रास्ते अपनी यात्रा को आगे बढ़ाते हुए अगले दर्शन हेतु बढ़ते चले गये।

इसके बाद धर्मनाथ, सुमतिनाथ, शांतिनाथ, महावीर, सुपार्श्वनाथ, विमलनाथ, अजितनाथ, नेमिनाथ और अंत में पार्श्वनाथ की टोंकों पर दर्शन, पूजन के बाद अपनी यात्रा वापिस धर्मशाला की ओर प्रारंभ की और सुबह के धुँधले प्रकाश में नीचे पहुँच गये। नीचे आकर मुनिराज को आहार दिया। उन्होंने सोचा कि नीचे की वंदना बाद में कर लेंगे। पहले थोड़ा आराम कर लेते हैं। जैसे ही वे लेटे तो उनकी नींद लग गई और सपने में ही तीर्थयात्रा करने लगे। सेठ जी भी विचार कर रहे थे कि पर्वत पर जायेंगे अच्छी-अच्छी द्रव्य चढ़ाएंगे चाँदी की थाली, सोने की कटोरियाँ में रख कर बहुत कीमती द्रव्य चढ़ाएँगे। ऐसी नारियल गोले बादाम पिस्ता अखरोट आदि जैसी अष्ट मंगल द्रव्य चढ़ाकर हम मंगल दर्शन करेंगे। ऐसी हमारे जैसी द्रव्य किसी के पास नहीं है।

एक बार तमिलनाडु में मारवाड़ी समाज के व्यक्ति अपनी ओर से विधान कर रहे थे, वे सेलम के थे। महाराज जी का सान्निध्य उन्हें प्राप्त हुआ। ऐसा विधान करने के लिए सभी इन्द्र-इन्द्राणियों के लिये अष्ट मंगल द्रव्य चढ़ाने हेतु थालियों में लगाई गई। जब वे पति-पत्नि दोनों आये, जो कि विधान में सौधर्म इन्द्र बने हुये थे। तो उन्होंने अपनी थैली में से अखरोट, बादाम, पिस्ता, काजू, किशमिस धोकर अपनी थाली में सजा लिये। सभी लोगों की नजर वहाँ पड़ी और कहने लगे कि थाली जब इतनी अच्छी सजी है तो फिर क्यों आप अपनी द्रव्य निकाल रहे हो वे बोले- भैया! जब मेरे घर में सबकुछ है, मेरी शक्ति है, जब मैं अच्छा-अच्छा चढ़ाऊँगा तो अच्छा-अच्छा चक्रवर्ती जैसा पाऊँगा। भगवान की सेवा, वैय्यावृत्ति जितनी अच्छी द्रव्य से करेंगे उतना ज्यादा पुण्य हमें प्राप्त होगा। कई व्यक्ति तो घर से द्रव्य नहीं ले जाते हैं और मंदिर की द्रव्य को ही धोकर पूजन कर आते हैं। वे दोनों लोग तो शिखर जी तक के लिये अपनी पोटली में द्रव्य लेकर गये और अच्छे भाव पूर्वक उसको चढ़ाया। अत: हमें अपने घर से अच्छी-अच्छी द्रव्य, उत्कृष्ट द्रव्य लेकर मंदिर में चढ़ाना चाहिए।

उधर सेठजी सुबह पर्वत की यात्रा के लिए निकल गये। सेठजी द्रव्य की सामग्री को लेकर बड़े ही उत्साह के साथ भाव सहित वंदना हेतु निकले। और सूर्योदय के पूर्व ही गौतम गणधर टोंक पर दर्शन के लिये पहँचते ही वे चकाचौंध से चौक गये, क्योंकि वहाँ प्रकाश बहुत अधिक था। वेदी के नजदीक देखा तो उन्हें रत्न, मोती दिखे। और विचार करने लगे कि मुझसे पहले कौन अन्य व्यक्ति आया। जिसने इतने मूल्यवान रत्न अर्पण किये। लगता है कि कोई इन्द्र या कोई चक्रवर्ती आया होगा उसी ने ये रत्न चढ़ाये होंगे बाकी तो ऐसा कोई नहीं दिखता। उसके मन को खेद हुआ कि वे रत्न, मोती अर्पित करने में लगे हैं और ये हमारी द्रव्य रत्नों के आगे फीके पड़ रही है। सेठजी ने अपनी आगे की वंदना जारी रखी और प्रत्येक टोंक पर उन्हें लाल, नीले, पीले, रत्न मोती नजर आये। उनका मन निराश हो गया कि मुझसे कीमती रत्न यहाँ किसने चढ़ाये हैं।

इस प्रकार वंदना पूर्ण करने के बाद वहाँ कार्यालय में सभी से जानकारी ली कि उनके पहले वंदना के

लिए कौन गये थे। सभी ने कहा सेठजी सबसे पहले आपकी ही वंदना हुई है और कोई नहीं गया। वे आश्चर्य चकित थे कि आखिर कौन हैं वो? जो सभी की नजरों से बचते हुए वंदना करके चले गये।

फिर उन्होंने द्वारपालों से पूछा कि आज पहले-पहले वंदना के लिये कौन-कौन गये थे? उन्होंने भी यही उत्तर दिया कि आपसे पहले कोई नहीं गया। हाँ! रात को 12 बजे दो व्यक्ति मैले कपड़े पहने हुये अवश्य गये थे। हमनें सोचा कि ये कर्मचारी होंगे।

उन्होंने विश्राम स्थल पर पहुँचने के बाद उन दोनों के बारे में जानकारी ली तो पता चला कि वे किसी स्थान पर सो रहे थे। वे धोती ओढ़कर विश्राम कर रहे थे। उनको जगाते हुये पूछा कि क्या आप दोनों वंदना करने गये थे? उन्होंने हाँ कहते हुये घबराहट के साथ कहा कि मुझसे गलती हो गई। क्षमाकरना-क्षमाकरना। अब कभी नहीं जाऊँगा, मुझे क्षमा करना। क्या करूँ यह सोचकर रात्रि को ही वंदना के लिये निकल गया कि फिर समय नहीं मिला तो माँ के द्वारा दी हुई सामग्री अर्पित नहीं कर सकेंगे। इस तरह से वे दोनों क्षमा-याचना करने लगे।

सेठ जी ने कहा कि तुमने वहाँ कुछ देखा था? उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने मात्र भगवान की स्तुति, वंदना की और माँ के द्वारा दी हुई द्रव्य समर्पित की। सेठ जी बोले- वहाँ मोती रत्न चढ़े हुये थे वे नहीं देखे? वे बोले- नहीं मैंने नहीं देखे। सेठजी विचार करने लगे कि फिर वे रत्न मोती आदि किसने चढ़ाये। सेठजी ने कहा कि तुमने प्रत्येक वेदी पर क्या अर्पित किया। वे बोले- नहीं वह बात मत पूछिये। करुणामयी भाव से कहने लगे कि सेठजी हम लोगों ने तो सिर्फ माँ द्वारा दिये हुए ज्वार के दाने चढ़ाये थे।

सेठजी बोले वे ज्वार के दाने तो रत्न बन गये। उन्होंने कहा कि नहीं-नहीं, आप हमारी हँसी नहीं उड़ाइए। सेठजी बोले हम हँसी नहीं कर रहे हैं। हम वास्तव में कह रहे हैं जाकर देखो तो थोड़ा। नहीं ऐसा नहीं हो सकता; उस माँ की भावना इतना प्रभाव कैसे हो सकता है।

धन्य हो वह बुढ़िया; जिसने मुझे उपदेश दिया था कि 'देखभाल कर चलना', जिसके माध्यम से मुझे सम्यग्दर्शन का और व्रत संकल्पों का गुरुओं से उपदेश मिला। धन्य हो ऐसी बुढ़िया को उन्होंने जाकर देखा तो जहाँ उन्होंने ज्वार के दाने चढ़ाये थे। वहीं पर वे रत्न, मोती चढ़े हुए थे।

धन्य है उस बुढ़िया का जीवन। जिसकी इतनी महान भावना थी। और ऐसे गुरुदेव भी धन्य हैं, जिनका आशीष हमको प्राप्त हुआ। दोनों लोग जब नीचे आये तो सभी लोग उनका सम्मान करने लगे उन्होंने कहा कि मेरा क्या स्वागत कर रहे हो। करना है तो उस माँ बुढ़िया का करो, जिसकी ऐसी महान भावना थी या यात्रा करवाने वाले सेठ जी का।

अन्ततः यह समाचार उस बुढ़िया तक पहुंच गया और वह उत्सुक हो गई कि कब आयेंगे वे मेरे बेटे, दोनों भाई। मैं उनको जल्द ही देखना चाहती हूँ।

सेठ जी को अंदर ही अंदर आश्चर्य हुआ कि ये दोनों सच्चे सम्यग्दृष्टि भक्त हैं, जिनने ज्वार अर्पित की थी और वे ज्वार के दानें देवों द्वारा रत्नों में बदल गये। यह एक सम्यग्दर्शन व दान की महिमा है। सेठजी ने भी

उनकी प्रशंसा की। जब वे पुनः नगर को आये तो सभी ने उनका स्वागत सम्मान किया। बहुत ही प्रशंसा की।

ज्यों ही बुढ़िया ने उनको देखा त्यों ही उन्हें अपने गले से लगा लिया और कहा कि बेटा तुमने तो बहुत बड़ा काम किया है। तुमने तो इतना बड़ा चमत्कार, अतिशय कर दिया। वे बोले–माँ! मेरा तो इसमें कुछ भी नहीं है। मैं तो निमित्त मात्र हूँ। तुम्हारी आस्था, शक्ति, श्रद्धा, भावना ने ही चमत्कार दिखाया है। धन्य है तुम्हारा जीवन!

गरीबों की भावना भी अगर ऐसी श्रेष्ठ हुआ करती है तो बड़े-बड़े अतिशय हो जाया करते हैं। ऐसे अतिशय प्राप्त करने वाले युवा थे देवपद और खेवपद।

ध्यान रखना कि अपनी भावना बड़ी पवित्र होनी चाहिए अच्छी द्रव्य हो, न्याय-नीति से कमाया गया धन हो, अच्छा नियम-संयम हो तो अतिशय भी प्राप्त होता है। भावना भव नाशनी कही गयी है। हमारी मान की भावना नहीं होनी चाहिए और न ही नाम की भावना होनी चाहिए।

धन्य है वह क्षेत्र जहाँ ऐसा चमत्कार हुआ। ऐसा वह क्षेत्र है–सम्मेदशिखर। और जहाँ से वे लोग गये थे वहाँ शांतिनाथ भगवान का जिनालय था उस क्षेत्र का नाम था–देवगढ़। और जहाँ वापिस आने पर राजा आदिक के द्वारा दी गई सम्मान राशि से उन्होंने जिन प्रतिमाओं के निर्माण कराने का भी सौभाग्य पाया और अंत में संयम धारण कर सद्गति को प्राप्त किया; धन्य। 'महावीर भगवान की जय'।

आध्यात्मिक ध्यान से कर्मों की निर्जरा होती है।

–आचार्यश्री आर्जवसागरजी

धर्म ध्यान का बड़ा महत्त्व है। ध्यान का दूसरा नाम एकाग्रता है। ध्यान का सम्बन्ध आत्मा से है। ध्यान तो विश्व में सभी के होता है, किन्तु आध्यात्मिक ध्यान तो ज्ञानी साधु-सन्तों के होता है। आध्यात्मिक ध्यान से कर्मों की निर्जरा होती है, यह वीतरागता की ओर ले जाता है। कर्मों की निर्जरा से आत्मा को मोक्ष मिलता है। एक होता है व्यावहारिक ध्यान जो जीवों पर दया व करुणा की ओर ले जाता है। यह प्रशस्त राग ध्यान में आता है जो पुण्य बंध का कारण है। ऐसा आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने अपने प्रवचन में बताया।

आचार्यश्री ने ध्यान के दो प्रकार बताये क्रियात्मक व निष्क्रियात्मक। यह निष्क्रियात्मक ध्यान अपनी काया व वचन व्यापार को रोकते हुये आत्मा पर मन स्थिर रखकर करना चाहिए। यह ध्यान साधुओं के होता है यह सम्पूर्ण निश्चय की ओर ले जाता है।

आचार्यश्री ने यह भी बताया कि ध्यान मात्र एक्शन से नहीं इन्टेशन से होता है। अतः द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से ध्यान होता है। भाव आत्मा को परमात्मा से जोड़ने के लिए होना चाहिए। काल प्रातः मध्याह्न और सायं का होना चाहिए। क्षेत्र शुद्ध, प्रशस्त और एकान्त होनी चाहिए। तथा द्रव्य रूप अपना शरीर पद्मासन, खड्गासन वज्रासन के रूप में सौम्य-मुद्रा के साथ हो और अपना आहार भी शुद्ध होना चाहिए ऐसे उत्कृष्ट अभिप्राय से ही ध्यान की सिद्धि सरलता से हो सकेगी।

साभार: आर्जव-वाणी

अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनंद, आतम-स्वस्थ

-पं.लालचन्द्र जैन ''राकेश''

कविता नैपथ्य-

प्रस्तुत कविता कवि पर परम पूज्य 108 आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की असीम अनुकम्पा का फल है। कविता 'भावना-विज्ञान' पर आधारित है। यह सत्य है कि ''यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी'' अर्थात् हम जैसी भावना भाते हैं, वैसे बन जाते हैं।

''भावना-विज्ञान'' शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य लाभ के लिए अद्भुत, अचूक एवं अमोघ महौषध है। आध्यात्मिक संत आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने कवि को मोक्षमार्ग की प्रेरणा देकर, इस शक्ति को जाग्रत कर दिया है जिससे वह संयम का पथगामी बन गया।

''भावना-विज्ञान'' कोई नई बात नहीं है। हमारे आचार्यों-कुन्दकुन्द, पूज्यपाद, उमास्वामी, कुमुदचन्द्र, मानतुंग एवं सहजानन्द जी वर्णी इत्यादि ने सोलहकारण भावना, वैराग्य भावना, बारहभावना का उल्लेख अपने ग्रन्थों में किया है। सहजानंदजी वर्णी का ''आत्म-कीर्तन'', मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान, मम स्वरूप है सिद्ध समान सभी अध्यात्म प्रेमियों का कण्ठहार बना हुआ है।

हम भावना के सातत्य चिंतन एवं पुरुषार्थ (संयम-व्रताचरण) के द्वारा आत्मशक्ति का उद्घाटन कर, स्वस्थ रह, समाधिमरण का क्रमशः अपने परमलक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं, यह कविता का भाव है।
-संपादक

(1)

कलयुग में अरिहंत नहीं है, जिनवाणी माता है मौन।
जगज्जनों का भवसागर से, अधुना पार उतारे कौन॥
ज्ञान-ध्यान-तपलीन श्रीगुरु, करे जगज्जन महदुपकार।
आप तिरें और को तारें, रत्नत्रय तरणी बैठार॥
''आचार्यश्री आर्जवसागरजी, दे शिक्षा पथ किया प्रशस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ''॥

(2)

जो, जैसे बनना चाहोगे, तुम वैसे बन जाओगे।
जैसी, जितनी गहराई से, सतत भावना भाओगे॥
अगर चाहते जिनवर बनना, बन जाओगे निस्सन्देह।
आचार्यों सम भाव योग का, सेवन करो नित्य अवलेह॥
करो आचरण वह क्रियायें, बतलाता संक्षिप्त समस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ''॥

(3)

जिनवर का अभिषेक किये से, पाप-मैलै धुल जाते हैं।
जो जिनवर की पूजन करते, स्वयं पूज्य हो जाते हैं॥
प्रभु मस्तक जो छात्र चढ़ाते, छत्रपति बन जाते हैं।
चंवर ढोरने वालों ऊपर, चंवर दुराये जाते हैं॥
करें आरती, गन्धोदक लें, रोग-शोक सब होते ध्वस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ''॥

(4)

शरीर धर्म का पहला साधन, यह कहती है जिनवाणी।
अतः जरूरी तन को देना, आवश्यक भोजन-पानी॥
पर कितना? जो बने सहायक, धर्म-साधना करने में।
समता-शमता धारण करने, प्रमाद-रुग्णता हरने में॥
अशुभ निवृत्ति, शुभ प्रवृत्ति, मन-वच-काया रक्खो व्यस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ''॥

(5)

कन्दमूल, छोड़ो अभक्ष्य, बाहर का खाना मत खाओ।
किसी पार्टी या होटल में, कभी भूलकर मत जाओ॥
अपना ही भोजन रखो साथ, जब यात्रा पर जाओ कहीं।
कोई कितना ही लालच दे, उसकी बातों में आओ नहीं॥
भोगोपभोग परिमाण करो, श्रावक-व्रत पालो समस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ''॥

(6)

जब तक स्वस्थ शरीर तुम्हारा, जब तक सक्षम अक्ष-समाज।
तब तक तपस्कर्म को करलो, अस्वस्थ हुये, कुछ बने न काज॥
व्रताचरण सामान्य व्यक्ति को, महत्-विशिष्ट बनाता है।
बहुत क्या कहें व्रत की महिमा, 'घर' विशिष्ट हो जाता है॥
श्रद्धा धारो, शक्ति सम्हालो, कर लो तन-मन को अभ्यस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ''॥

(7)

''यदपि है चर्या पूर्व संयमित, किन्तु नियम हैं नहीं विशेष।
अतः किये अक्षरशः धारण, श्री गुरुवर पा हित-उपदेश॥
आचार्यश्री आर्जवसागरजी, मार्ग सुझाया हितकारी।
अक्षरशः पालन करने की, मैंने करली है तैयारी॥
ऐसे गुरुवर को है प्रणाम, जिनने बतलाया पथ प्रशस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(8)

सूरज से पहले उठ जाता, समय ब्रह्ममुहूर्त के होत।
पढ़ता हूँ नवकार मंत्र-सह, सुप्रभात-स्वयंभू-स्तोत्र॥
आवश्यक-अनिवार्य क्रियाओं, पा निवृत्ति करता स्नान।
तन-मर्दन कर, प्रभु आरती, पाठ भक्तामर, करता ध्यान॥
बेटे सह जाता मंदिर जी, करता प्रातः काल प्रशस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(9)

श्री जिनालय को प्रणाम कर, चढ़ जाता हूँ मंजिल तीन।
जिन दर्शन, अभिषेक आदि से, करता कठिन कर्म को क्षीण॥
त्रय मंजिलों राजित जिनवर, सबको सादर करूँ प्रणाम।
फिर पूजन, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, मंत्र जाप, भक्ति निष्काम॥
मन निर्मल होता है इनसे, धुल जाते हैं पाप समस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(10)

लगभग एक-डेढ़ घण्टे तक, रहता प्रभु के चरण कमल।
मिलता है सन्तोष, भावना होती है अतिशय उज्जवल॥
यथालब्ध आहार के पहले, पढ़ता मौन मंत्र नवकार।
करूं प्रार्थना ''सब मुनिजन के, निरन्तराय होवें आहार॥
बस दो बार करूँ भोजन, होने ना पाता सूर्य अस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(11)

कन्दमूल, छोड़े अभक्ष्य, बाहर का भोजन त्याग दिया।
घर का लेता सात्विक भोजन, भोगोपभोग परिमाण किया॥
मन में रहती है यही साध, आगे को और बढ़ायें कदम।
निर्दोष अणुव्रतों को पालें, 'प्रतिमारोहण'' पर आयें हम॥
यदि अन्य विकल्प आता मन में, कर देता सबको निरस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(12)

यद्यपि जरा डराती मुझको, पर मैं जरा न डरता हूँ।
लकड़ी रखता हूँ साथ सदा, उससे निज रक्षा करता हूँ॥
देता हूँ बस तन को उतना, जितना आवश्यक चलने को।
मन को भी समझाता हूँ, दे साथ नियम-व्रत पलने को॥
मैं तन को सदा चलाता हूँ, चलता घोड़ा ही रहे मस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(13)

माँ जिनवाणी श्रुतस्कन्ध से, बांधा है मर्कट मन को।
संयम की दृढ़ सांकल से, साधा है जर्जर तन को॥
मन-इन्द्रियां वश करने के, मैं करता हूँ यत्न सकल।
अभ्यास निरंतरता द्वारा, होता जाता हूँ पूर्ण सफल॥
क्लेश और संक्लेश अतः तन-मन को करते नहीं त्रस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(14)

अगर कभी अतिचार लगे तो, पुनः-पुनः पछताता हूँ।
मन से धिक्-धिक् करता खुद को, मन-मन स्वयं लजाता हूँ॥
अनाचार ना होने पाये, इतना दृढ़तम है श्रद्धान।
उपादान डिगने ना दूंगा, सहस्र निमित्त डिगायें आन॥
शक्ति सम्हालो अपनी आतम, सूरज है होने को अस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(15)

जो उत्तम उद्देश्य को लिये, क्रमशः कदम बढ़ाते हैं।
वे अपने उत्तम उद्देश्य में, पूर्ण सफल हो जाते हैं॥
कछुआ है आदर्श सामने, जीतूंगा जीवन की रेस।
उन्हें सफलता निश्चित मिलती, प्रयत्न जो करते स्वयं हमेश॥
काय छहों का करता पालन, गुप्त हूँ रखता अक्ष-समस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(16)

प्रातःकाल से रात्रि से पूर्व तक, नियमबद्ध रहते सब कार्य।
प्रेम परस्पर वृद्धिंगत हो, यह सुध्यान रखूं अनिवार्य॥
प्राप्त कार्य करता शुभमन से, कभी न करता टालम टूल।
मन प्रसन्न रहता है इससे, पाता सुख-शांति अनुकूल॥
मन-वच-काया रखूं साधकर , न हो किसी को मुझ से कष्ट।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(17)

आचार्यश्री आर्जवसागर का, मम मन अति आभारी है।
गुरुवर मेरी जीवन सरिता, मोड़ी और सुधारी है॥
अब भी नैया डगमग करती, श्रीमुनिवर का करता ध्यान।
दक्षिण हाथ उठाये दिखते, देते आशिष सह-मुस्कान॥
पूज्यश्री के दर्श मात्र से, नश जाते हैं विघ्न समस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(18)

जब से मैंने श्री गुरुवर की, भव्य देशना पाली है।
तबसे मेरी जीवन-बगिया में खुशबू-खुश हाली है॥
सदा साथ रहती गुरुवर की, आशिष की छत्रच्छाया।
जिसकी जैसी श्रद्धा रहती, उसमें वैसा फल पाया॥
निरापेक्ष बन्धु है गुरुवर, राग-द्वेष से पूर्ण विरक्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(19)

इससे पहले मेरा तन-मन, रहता अतिशय मरा-मरा।
कारण व्रत-संयम में खाली, जैसे जल बिन स्वर्ण घड़ा॥
अब लगता है पास से कुछ है, आगे को पौरुष पुरंजोर।
क्रम-क्रम से बढ़ती जायेगी, पकड़ी दृढ़ संयम की डोर॥
उपादान मजबूत आत्मा, मिले सफलता हो अभयस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

(20)

श्रुत में भक्तिः श्रुत में भक्ति, श्रुतिभक्तिः मन रखता लीन।
आयुष्कर्म निषेक झड़ रहे, क्षण-क्षण काया होती क्षीण॥
श्रीगुरुवर आर्जवसागर के, हो चरण सन्निधि समाधिमरण।
यही प्रार्थना निश-दिन करता, श्री जिनवर के पूज्य चरण॥
संवेगादिक परिणामों में, रखता हूँ आतम को व्यस्त।
अजर-अमर हूँ, नित्य-निरंजन, सत्-चित्-आनन्द, आतम-स्वस्थ॥

॥ शुभं-भुयात्॥

मंत्रों में भावों का बड़ा महत्त्व है

–आचार्यश्री आर्जवसागरजी

जीवन में मंत्रों का बड़ा महत्त्व है। जैन धर्म में णमोकार मंत्र का बड़ा महत्त्व है। यह मंत्र उत्कृष्ट फलदायी है। जब हम ध्यान पूर्वक इस मंत्र का जाप करते हैं तो हमारी आन्तरिक शक्तियाँ जागृत होती हैं। ये शक्तियाँ जीवन में नई स्फूर्ति लाती हैं। आत्मा को पवित्र करती हैं। इससे बिगड़े काम बनते हैं तथा विघ्न दूर हो जाते हैं। यहाँ तक कि विष भी निर्विषता को प्राप्त हो जाता है। जाप व ध्यान सही न हो तो यह काया तक ही रह जाता है। जिस प्रकार रावण ने जाप जपा किन्तु उसमें राम को मारने का छल था अतः उसकी हार हुई और सीता ने भाव सहित जाप जपा तो अग्नि कुण्ड भी जल का कुण्ड हो गया तथा राम की जीत हुई। इसी प्रकार सोमा सती के णमोकार मंत्र के जाप के प्रभाव से नाग हीरे का हार बन गया था व सेठ सुदर्शन की सूली सिंहासन में बदल गयी थी। इस प्रकार मंत्र को पूरे मनोभाव व निस्वार्थ भाव से धीरे-धीरे व शुद्ध रूप में अक्षर, व्यंजन व मात्रा की शुद्धता को ध्यान में रखकर पढ़ना चाहिए। ऐसा श्री आचार्य आर्जवसागर जी महाराज ने मंदिर जी में अपने प्रवचन में कहा।

इसके अलावा बताया कि जिस प्रभु का मंत्र हम पढ़ रहे हैं उस प्रभु का स्वरूप हमें ध्यान आना चाहिए। तन, मन व स्थान की शुद्धि से और अधिक परिणाम मिलता है, तथा सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं जिनके माध्यम से हम वर्तमान को तो मंगलमय बनाते ही हैं साथ ही हमें दूरवर्ती चीजों का भी ज्ञान हो जाता है।

मंत्रों की शक्ति हमें सरागता से वीतरागता की ओर ले जाती है। सरागता संसार में भटकाएगी तथा वीतरागता मोक्ष के द्वार पर ले जायेगी। अतः मंत्र जाप में भाव लगना जरूरी है।

साभारः आर्जव-वाणी

गतांक से आगे......

प्रागैतिहासिक-प्राग्वैदिक जैन धर्म और उसके सिद्धान्त

-श्रीनाथूलालजी जैन शास्त्री

भगवान महावीर का काल

भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण के 250 वर्ष बाद भगवान महावीर हुए। पार्श्वनाथ के समय उत्तर, पश्चिम, पूर्व, दक्षिण समस्त भारत में राजसत्तायें गणतंत्र के रूप में उदित हो चुकी थीं। आठ कुलों में विभक्त वैशाली और विदेह में वज्जिगण का प्रभाव था। ये सब पार्श्वनाथ के भक्त थे। कलिंग देश के नरेश करकुंडु भी पार्श्वनाथ के भक्त थे। ये अंतिम समय में दि.साधु हो गये थे। श्री रामप्रसाद चान्दा, प्रो. हर्म्सवथक आदि के मतानुसार निर्ग्रन्थ जैनसंघ भगवान महावीर के पहिले से ही था। महाभारत काल के पश्चात् श्रमणोत्कर्ष आन्दोलन छठी शताब्दी ईस्वी पूर्व में पहुँच गया था। यह ज्ञातृ पुत्र भगवान महावीर का समय था। यह धार्मिक व दार्शनिक क्रांति का युग था। चीन में कनफ्युशस और लाओसे, ईरान में जरथुस्त, यूनान के पैथेगोरस, फिलिस्तीन में मूसा आदि प्रसिद्ध विचारक एवं धर्म प्रवर्तक हुए थे।

भारत के श्वेतकेतु, उददालक, याज्ञकल्क्य आदि वैदिक व क्षत्रिय उपनिषद के ज्ञाता अध्यात्म का प्रचार कर रहे थे। कपिल, पातंजलि, कणाद, गौतम, जैमिनी आदि ऋषि सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा आदि दर्शनों का विकास कर रहे थे। व्याकरण, ज्योतिष आयुर्वेद आदि का विकास हो रहा था। गौशाल, पूरण कश्यप, कात्यायन, आदि भी अपने-अपने सिद्धांतों के प्रचारक बने हुए थे। धार्मिक चेतना की प्रतिक्रिया रूप में चार्वाक (नास्तिक) का भी जन्म हुआ था।

इसी काल में गौतम बुद्ध भी श्रमणानुयायी श्रमणांतर्गत थे। ये शाक्य वंशी कपिल वस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र थे जिनका नाम सिद्धार्थ गौतम था। मगध के शाक्य प्रजातंत्र के अध्यक्ष राजा शुद्धोदन ने अपने पुत्र बुद्धदेव को संसार में आसक्ति हेतु यशोधरा से विवाह कराया किन्तु प्रारम्भ से ही विरक्त बुद्ध एक दिन रात्रि में समस्त परिवार को छोड़कर गृह से निकल गये। उन्होंने एक दिगम्बर मुनि से दिगम्बर दीक्षा ग्रहण कर ली। किन्तु एक दिन निरंजना नदी के तट पर किसी वृक्ष के पास खड़े हुए विचार करने लगे कि मैं इतने व्रत-उपवास और तपस्या कर रहा हूँ शरीर मेरा उत्तरोत्तर निर्बल होकर मनोबल को भी कमजोर बना रहा है। अब मुझे इन कठिन मार्ग को छोड़कर मध्यमार्ग को अपनाना ही होगा। यह विचार कर उन्होंने उस दिगम्बर मार्ग को त्याग दिया। बौद्धमत क्षणिक वाद को मानता है। आत्मा और परलोक के विषय में उनका कोई स्पष्ट मत नहीं है। भगवान महावीर और बुद्ध समकालीन होने पर भी कभी साक्षात्कार नहीं हुआ। बुद्धदेव बौद्धधर्म के संस्थापक थे, किन्तु भगवान महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे। वे निर्ग्रन्थ परम्परा के अंतिम तीर्थंकर थे।

भगवान महावीर के समय भारत वर्ष तीन भागों में विभक्त था। हिमालय और विध्यांचल के बीच तथा सरस्वती नदी के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम की ओर का प्रांत मध्यदेश कहलाता था। इस मध्यदेश के उत्तर में उत्तराखंड था। दक्षिण वाला प्रांत दक्षिण पथ था। उस समय के प्रसिद्ध राज्य चार थे।

1. मगध–इसकी राजधानी राजगृह थी। पीछे पाटलीपुत्र राजधानी बन गई। पहले विंबसार राजा थे। पीछे उनके पुत्र अजातशत्रु थे।

2. कौशल–दूसरा राज्य था। इसकी राजधानी श्रीबस्ती थी जो रावती नदी के तट पर्वत के अंचल में विद्यमान थी।

3. कौशल–दक्षिण की ओर वत्सों का तीसरा राज्य था। यमुना तीर पर इसकी राजधानी कौशांबी थी। यहाँ उदयनराजा राज्य करता था। इसके पिता का नाम शतानिक था।

4. चौथा राज्य दक्षिण में अवंति था। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी। इसका राजा चंद्रप्रद्योत था। इन चार के सिवाय 12 राजनैतिक छोटी–बड़ी शक्तियां और थीं।

1. अंग राज्य–राजधानी चंपापुरी।

2. काशी–राजधानी वाराणसी

3. बज्जि राज्य–लिच्छवि, विदेह आदि आठ वंश इसमें थे। राजधानी मिथिला, राजा जनक इसी विदेह वंश के थे।

4. वुशीनारी और पावा के मल्ल ये पर्वत के अंचल में स्वाधीन जातियाँ थी।

5. चेदिराज्य– इसके दो उपनिवेश पुराना नेपाल में और नूतन पूर्व में कौशांबी के पास था।

6. कुरुराज्य– इस की राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी। इसके पूर्व में पांचाल और दक्षिण में मत्स्य जाति पांव सत्ती थी।

7. दो राज्य पांचालों के थे। इसकी राजधानी कन्नौज और कपिल थीं।

8. मत्स्य राज्य जो कुरु राज्य के दक्षिण में और यमुना के पश्चिम में था। इसमें अलवर, जयपुर और भरतपुर के भाग शामिल थे।

9. शूरसेनों का राज्य– इसकी राजधानी मथुरा थी।

10. अश्मक– इसकी राजधानी गोदावरी नदी के तट पोतली में थी।

11. गांधार– इसकी राजधानी तक्षशिला थी।

12. काम्बोज राज्य– इसकी राजधानी द्वारिका।

11. प्रजातंत्र राज्य–

1. शाक्यों का राज्य	–	कपिल वस्तु राजधानी
2. भग्गों का राज्य	–	संसुमार पहाड़ी राजधानी
3. बुल्लियों का राज्य	–	अलकप्य राजधानी
4. कालामों का राज्य	–	रामग्राम राजधानी
5. कोलियों का राज्य	–	कैशपुंज राजधानी

6. मलयों का राज्य	–	कुक्षी नगरी राजधानी
7. मलयों का राज्य	–	पावा राजधानी
8. मोर्यों का राज्य	–	पिप्ली वन राजधानी
9. मलयों का राज्य	–	काशी राजधानी
10. विदेहों का राज्य	–	मिथिला राजधानी
11. लिच्छवियों का राज्य	–	वैशाली राजधानी

भगवान महावीर इसी वंश के पुत्र थे। ये राज्य गोरखपुर, बस्ती, मुजफ्फरपुर जिले के उत्तर में बिहार प्रांत में फैले हुए थे। यहाँ राज्यों और शासकों के नाम लिखने का प्रयोजन यह है कि इन राज्यों में भगवान महावीर का स्थान कहाँ है, यह विदित हो सके, साथ में उस काल में प्रजातंत्र में शासन का कार्य एक सभा द्वारा होता था। सभा में एक सुयोग्य व्यक्ति सभापति चुने जाते थे। वे ही राजा के पद से सम्मानित माने जाते थे। वज्जियों का प्रजातंत्र प्राचीन भारत का एक संयुक्त राज्य था। इसकी राजधानी वैशाली थी। इसकी विदेह और लिच्छिवि दो प्रधान जातियाँ थी।

भगवान महावीर के पिता सिद्धार्थ एवं नाना चेटक थे गणराज्य वज्जि राज संघ में सम्मिलित थे। लिच्छिवि बड़े परिश्रमी, प्रभावशाली थे, धार्मिक एवं समृद्ध थे। जो तीर्थंकर थे जैनधर्म के उपासक थे। वज्जि राजसंघ की राजधानी वैशाली, वणियग्राम, कुंडग्राम एवं वैशाली इन तीन भागों में विभक्त थी। कुंडग्राम वसुकुंड 20 मील की लंबाई चौड़ाई में बसा था। चीनी यात्री ह्युएन्सांग ने देखा था कि यह बड़ा सरसब्ज विविध सुंदर वृक्षों और महलों से समृद्ध था। सारा वज्जिदेश करीब 1600 मील की परिधि में बसा हुआ था। राजा चेटक बड़े वीर पराक्रमी जैनधर्मानुयायी एवं विनयी थे। चेटक के 10 पुत्र एवं 7 पुत्रियाँ थीं। सबसे बड़ी पुत्री त्रिशला भगवान महावीर की माता थी। चेलना महाराज श्रेणिक की पत्नी थी, चंदना बाल ब्रह्मचारिणी आर्यिका होकर भगवान के समवसरण में आर्यिका प्रमुख हो गई थी। मुनि अवस्था में भगवान को इसी ने आहार दिया था। उस समय जैन निर्ग्रन्थ नाम से प्रसिद्ध थे। भगवान महावीर को मज्झिम निकाय बौद्ध ग्रंथानुसार निग्गंथ नाथ पुत्र कहते थे। भ. महावीर ज्ञातृवंशी या नाथवंशी कहलाते थे।

उस समय की आर्थिक स्थिति कृषि होने से संतोषप्रद थी। अन्नोत्पादन खूब होने और विदेशों में नहीं भेजा जाने से प्रजा का सानंद जीवन यापन होता था। सब लोग अपनी स्वतंत्र अजीविका से कमाते और खाते थे मजदूरी करने का निवाज नहीं था। प्रजा में अमीर और गरीब का कोई खास भेद नहीं था। वर्णाश्रम धर्म के अनुसार सभी अपना-अपना कार्य व्यवस्थित रूप से करते थे। धार्मिक क्षेत्र में हिंसा अहिंसा का वातावरण संघर्षमय था, जिसे भगवान महावीर और उनके भक्त लोग सुलझाने की कोशिश करते थे। सामाजिक व्यवस्था संतोष प्रद थी। भगवान महावीर ने सबसे बड़ा कार्य यह किया कि जनता के मन में जो अशांति और दु:ख था यह उनकी अज्ञानता के कारण था इस अज्ञानता को दूर करने हेतु उस समय जो अनेक दार्शनिक अपने को तीर्थंकर मानकर शांति का संदेश देने का दावा कर रहे थे वे सब अपने इस कार्य में सफल न होकर लोक के वातावरण को संघर्षमय बना रहे थे। जनता को सत्य मार्ग नहीं सूझ रहा था। इसी अशांत वातावरण में क्रांति लाकर भगवान

महावीर ने अहिंसा, अनेकांत और कर्मवार की विस्तृत व्याख्या करके लोक में मोह और अज्ञान के निराकरणार्थ सहानुभूति, प्रेम और वात्सल्य का स्थान–स्थान पर प्रचार प्रचार प्रसार किया। व्यक्ति जब अपने को भली–भांति समझ लेता है तो फिर उसे कोई भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में दु:ख का अनुभव नहीं होता। यही भगवान महावीर की क्रांति का रूप था। जिसे भिन्न–भिन्न प्रकार से विद्वानों ने बाह्यरूप में उसका विस्तार कर प्रगट किया है। विश्व के प्राणियों को दु:खी जानकर उनका दु:ख (कष्ट नहीं) किस प्रकार दूर हो इस उदारता की भावना से वे तीर्थंकर प्रकृति का बंध करते हैं और तपस्या द्वारा कर्म शिखर को नष्ट कर अर्हंत, सर्वज्ञ एवं वीतराग अवस्था प्राप्त कर तीर्थंकर प्रकृति के उदय होते ही समवसरण (धर्मसभा) द्वारा धर्मोपदेश देकर प्राणियों का उद्धार करते हैं। महात्मा बुद्ध भगवान महावीर के (सैद्धान्तिक) विरोधी थे और बुद्ध धर्म और जैनधर्म के अनुयायियों में संघर्ष के अवसर आए, इसका समाधान निम्न प्रकार है–

''मच्झिम निकाय''

नायक प्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ में लिखा है–

'बुद्धदेव कहते हैं, हे महात्मन् मैं एक समय राजगृह नगर के गृद्धकूट पर्वत पर विहार कर रहा था। वहाँ ऋषिगिरि के समीप कालशिला पर बहुत से निर्ग्रन्थ मुनि तीव्र तप में प्रवृत्त थे। मैंने उनके पास जाकर कहा, अहो निर्ग्रन्थों, तुम ऐसी घोर वेदना को क्यों सहन करते हो। वे बोले, जो (भगवान महावीर) निर्ग्रन्थ, ज्ञानपुत्र, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हैं, हमें हमेशा उनका ध्यान रहता है। उनका उपदेश है कि हे निग्रन्थो! तुमने जो पूर्व जन्म में पाप किये हैं, इस जन्म में तपस्या द्वारा उनकी निर्जरा कर डालो। मन, वचन, काय के संवर से नूतन पाप कर्म का आश्रव नहीं होता है और बिना आश्रव कर्म नहीं बंधते। तप करने से आगमी कर्म रुककर पूर्व कर्मों की निर्जरा होती है अत: तप आत्मा का कल्याणकारी है। यह जानकर बुद्धदेव बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने महावीर की प्रशंसा की।

'सामगाम सुत्तंत' बौद्ध ग्रंथ में लिखा है कि पावा में भगवान महावीर के मोक्षगमन की बात जब बुद्धदेव के शिष्य आनंद ने सुनी तो वे खूब हर्षित हुए। यह समाचार बुद्धदेव के पास भी सुनाया गया। भगवान के निर्वाण के बाद बुद्धदेव पांच वर्ष तक जीवित रहे।

ईश्वर को जगत्कर्ता न मानने और अपने पूर्व जीवन में दिगम्बर साधु रूप में जीवन व्यतीत करने आदि कारणों से भ. महावीर और गौतमबुद्ध श्रमण संस्कृति के अंतर्गत माने जाते हैं। इन्हें वैदिक लोग ''नास्तिको वेद निंदक'', वेद निंदक नास्तिक कहलाता है। ऐसा कहते हैं। क्योंकि 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' वेद के अनुसार यज्ञ में की गई पशु हिंसा हिंसा नहीं मानी जाती। इसका विरोध जैन और बौद्ध करते हैं। ये सांख्य आदि भी जगत को ईश्वर कर्ता नहीं मानते।

भगवद् गीता में यह भी बतलाया गया है कि–

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव रिपुरात्मन: ॥(भ.गी.6, 5)

अर्थ– आत्मा के द्वारा आत्मा का उद्धार करे, आत्मा की उपेक्षा न करे। आत्मा ही आत्मा का बंधु है और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है।

यों बौद्धमत और जैनधर्म में बहुत अंतर है। बौद्धमत का क्षणिकवाद प्रसिद्ध है जबकि वह नयवाद नहीं मानता। आत्मा और परलोक के संबंध में भी उसका स्पष्ट मत नहीं है। दीपक के बुझने के समान आत्मा का वह मोक्ष मानता है। अहिंसा की व्याख्या में भी अधिक शैथिल्य और विरोध है। फिर भी जापान, चीन, आदि में उसका अधिक प्रचार प्रसार है। इसी कारण जैनधर्म का ज्ञान न होने से लेखकों ने बौद्ध धर्म की जैनधर्म को शाखा लिख दिया था।

भगवान महावीर ने जैनधर्म को अहिंसा का जैसा प्रतिपादन किया वैसा अन्यत्र नहीं मिलेगा।

अन्य मतों में अहिंसा–

अहिंसा सिद्धांत को जिस धर्म ने जितना अपनाया, वह उतना ही महान है इसके कतिपय आधुनिक उदाहरण निम्न प्रकार है:–

लार्ड क्राइम्ट (महात्मा ईसा)–

फिलिस्तीन में श्रमण जैन साधु बड़ी संख्या में मठों में रहते थे। हजरत ईसा ने जैन साधुओं से अध्यात्म विद्या का रहस्य पाया था।

(अनेकांत बाल.7 पेज 173)

हजरत ईसा जब 13 वर्ष के हुए, घरवालों ने उन्हें विवाह के लिए मजबूर किया वे घर छोड़कर सौदागरों के साथ सिंध के रास्ते भारत चले आये थे।

(हजरत ईसा और ईसाई धर्म, पं. सुन्दरलाल पृ.22)

भारत में आकर वे बहुत दिनों तक जैन साधुओं के साथ रहे (हजरत ईसा और ईसाई धर्म पृ. 162) ईसा ने अपने आचार विचार की मूल शिक्षा जैन साधुओं के पास ली थी।

(इतिहास में भ. महावीर का स्थान पृ.16)

हजरत मोहम्मद साहब–

हजरत मोहम्मद अहिंसा के प्रभाव से अछूते नहीं थे। उनका अंतिम जीवन महाअहिंसक था। खुरमा रोटी और दूध उनका भोजन था। अपने कलामे हदीस में हजरत मोहम्मद साहब ने फरमाया कि यदि तुम जग के प्राणियों पर दया करोगे तो खुदा तुम पर दया करेगा। कुर्बानी का मांस और खून खुदा को नहीं पहुँचता बल्कि तुम्हारी परेजगारी (पवित्रता) पहुँचती है।

(पैगंबर मोहम्मद साहब 'कलाम हदीस' (कुरान शरीफ, पार.17, मुराहज, रुक.5, आयत 38) मौलवी कादर वक्स–इस्लाम की 2री किताब)

एक शिकारी हिरणी को पकड़ कर ले जा रहा था। मार्ग में हजरत मोहम्मद साहब मिले। हिरणी ने उन से कहा– मेरे बच्चे भूखे हैं, थोड़ी देर के लिए मुझे छुड़वा दो। बच्चों को दूध पिला कर मैं जल्दी वापस आ

जाऊँगी। हिरणी के दर्द भरे शब्दों से मोहम्मद साहब का हृदय पसीज गया। उनके आँखों में आँसू आ गए उन्होंने शिकारी से कहा-

हैवान पर अंदेशाये बहशत जरा न कर।
आती है वह बच्चों को अभी दूध पिलाकर॥

शिकारी हँसा और कहने लगा कि पशुओं का क्या विश्वास? मोहम्मद साहब बोले-अच्छा हम जामिन है। शिकारी बोला अगर यह वापस नहीं आई तो इसकी जगह तुम्हें शिकारे अजल बनना पड़ेगा। शिकारी ने हजरत की जमानत पर हिरणी को छोड़ दिया। हिरणी अपने बच्चों के पास गई। बोली-एक महापुरुष ने मुझे जमानत पर छुड़ाया है। शिकारी ने मुझे पकड़ लिया था। बच्चों ने कहा- माता हम पर जैसे बीतेगी, हम देख लेंगे। तू वचनहारी न हो। हिरणी ने वापिस आकर हजरत साहब को धन्यवाद किया। शिकारी से कहा-अब मैं जिवे होने को तैयार हूँ। उसने हिरणी को छोड़ दिया। मोहम्मद साहब बड़े दयालु थे। उन्होंने अहिंसा का प्रचार किया।

(जैन धर्म और इस्लाम खंड 3)

गुरुनानक देव-

गुरुनानक देव मांस भक्षण विरोधी थे। वे एक दिन घूमते हुए जंगल में जा निकले वहाँ के लोगों ने उनसे भोजन के लिए कहा तो गुरुजी ने फरमाया-

यों नहीं तुम्हारी खाये कदापि,
हो सब जीवन के संतापी।
प्रथम तजो आमिष का खाना,
करो जास हित जीवन हाना॥

हम तुम्हारे यहाँ भोजन नहीं कर सकते क्योंकि तुम जीव हिंसा करते हो। जब तक तुम मांस भक्षण का त्याग न करोगे, तुम्हारे जीवन का कल्याण न हो सकेगा।

(नानक प्रकाश पूर्वार्ध अ. 55)

स्वामी दयाचंद सरस्वती-

स्वामी जी ने मद्य, मांस, मधु के त्याग की शिक्षा दी और पात्र में छान कर पानी पीने का उपदेश दिया।

(सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3-10, बिना छने जल का त्याग खंड 2)

श्री जरदोस्त की शिक्षा-

पारसी धर्म में बेजुबान पशुओं की हिंसा बहुत बड़ा गुनाह है। पूज्य गुरु जरदोस्त मांस त्यागी थे।

(पं. ईश्वरलाल- मांसाहार विशारद भाग 2 पृ. 85-90/शापस्तलाशापस्त)

उन्होंने दूसरों को भी मांस त्याग की शिक्षा दी। सेठ रुस्तम ने तो अंडा तक खाना पाप बताया है। उनका विश्वास है कि मांसाभक्षण से मनुष्य के स्वाभाविक गुण तथा प्रेमभावना नष्ट हो जाती है। जो अपने स्वार्थ या दिल्लगी के कारण किसी को मारते हैं वे दोजख आग में झुलसते हैं।

भगवान महावीर का विहार

भगवान का जन्म चैत्रसुदी 13 को हुआ था। दिगम्बर मुनि दीक्षा मंगसिर सुदी 10 को वन खंड उद्यान में हुई थी। दो दिन उपवास के बाद कूलनगर के कूलनृप के यहाँ आहार हुआ था। विहार करते हुए भगवान उज्जयिनी के अति मुक्तक श्मशान भूमि में रात्रि को प्रतिमायोग धारण कर ध्यान में लीन थे। उस समय 'भव' नामक रूद्र ने भयंकर उपसर्ग किये। अंत में विवश होकर उपसर्ग विजयी भगवान से क्षमा मांगकर उनका 'अतिवीर' नाम रखा।

मक्खली गोशाल भगवान पार्श्वनाथ परम्परा का मुनि था। भ. महावीर के समवसरण में गणधर पद न मिलने से श्रावस्ती में आजीवक संघ का नेता बन गया। मक्खलि गोशाल या मस्करी गोम्मटसार के अनुसार अज्ञान मिथ्यात्व में प्रसिद्ध है। बारह वर्ष तप करने के पश्चात् भगवान केवलज्ञानी–सर्वज्ञ हुए। वह स्थान जृंमक ग्राम–ऋजुकूला नदी तट व दिन वैशाख सुदी दशमी था।

राजगृही के विपुलाचलपर 557 ई.पू. श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को भगवान महावीर की समवसरण में प्रथम देशना हुई। उसकी स्मृति में पावन दिवस वीरशासन जयंती प्रसिद्ध हुई। जब भगवान का समवसरण निर्मित हुआ और इन्द्रभूति गौतम प्रथम गणधर हुए। मगध सम्राट् श्रेणिक बिंबसार ने भी भक्ति पूर्वक भगवान की वन्दना की और उपदेश का श्रवण करने आये। उन्होंने प्रश्न किया कि मैं किस पुण्य से सम्राट् हुआ हूँ। भगवान की वाणी में इसका उत्तर मिला कि तीसरे पूर्वभव में तुम मांसाहारी थे। मुनिराज के उपदेश से तुमने काक मांस का त्याग किया और भयंकर रोग ग्रस्त होने पर चिकित्सक ने केवल काक मांस ही इसकी औषध बतलाई। तुमने इसे स्वीकार नहीं किया और मर जाना ठीक समझा। इसके फलस्वरूप तुम देवलोक में जाकर वहाँ से इस पर्याय में उत्पन्न हुए हो। मांसादि त्याग का बड़ा महत्व है। जिस समय महाराजा श्रेणिक वीरप्रभु की वन्दना को पुरवासियों के साथ जा रहे थे उसी समय एक मेंढक भी पुष्प लेकर जा रहा था, किन्तु वह श्रेणिक के हाथी के पैर से दबकर मर गया और भक्ति की भावना से मरकर देव पर्याय में उत्पन्न हुआ और वहाँ से समवसरण में मुकुट में मेंढक का चिह्न सहित दर्शन करने आया।

भगवान की वाणी में यह भी बताया गया कि भगवान महावीर अपने पूर्वभवों में पुरुहरवा भील थे। उस भव में मुनिराज के उपदेश से मांस त्याग किया उसके पुण्य से वे देवलोक में जाकर भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती के मरीचि पुत्र हुए।

भगवान के समवसरण में श्रेणिक पुत्र अभय कुमार, वारिषेण और मेघ कुमार ने मुनिदीक्षा ग्रहण की। मेघकुमार के संबंध में पूर्वजन्म की घटना है कि जब हाथी की पर्याय में थे। भयंकर दावानल से बचने हेतु एक सुरक्षित स्थान में पहुँचे। वहाँ बहुत पशु मौजूद थे। वहाँ वह हाथी जिस किसी प्रकार सिकुड़ कर खड़ा हो

गया। शरीर खुजा लेने को जब पैर उठाया तो नीचे खरगोश का शिशु आ गया। हस्ती को तीन दिन तक अपनी टांग को नीचे न रखते हुए उठाये ही रखना पड़ा। इस कष्ट में उसके प्राण छूट गये और वही मेघकुमार की पर्याय में उत्पन्न हुआ है। इस पूर्वभव की जानकारी से उसको वर्तमान में कष्ट सहन की शक्ति प्राप्त हुई। उसने दृढ़ता पूर्वक तप करना प्रारम्भ कर दिया।

राजगिरि के श्रेष्ठ व्यापारी शालिभद्र ने प्रश्न किया कि मैं किस पुण्य से इस अधिक धनसंपत्ति का स्वामी हुआ हूँ। उसे उत्तर मिला कि वह पूर्व जन्म में एक निर्धन ग्वाल पुत्र था। नाम उसका संगम था। कई दिन तक उसे भोजन नहीं मिला। बालक अवस्था में पड़ोसी के यहाँ खीर बनती देखकर उसने माता से मांग की। परन्तु धर में दूध व चावल लाने को पैसे नहीं थे। पड़ोसी ने यह स्थिति देखकर सामग्री एकत्रित कर दी। खीर तैयार होते ही वह खाने को तत्पर हो रहा था कि वहाँ मुनिराज आहार हेतु आ गये। उसने भक्ति पूर्वक आहार दिया। आहार दान के पुण्य से वह धन्ना सेठ हुआ। यह शालिभद्र को दान का फल ज्ञात हुआ। अर्जुन माली अत्यंत दुष्ट था। वह छह पुरुष और एक स्त्री को प्रति दिन मार डालता था। वह समवसरण में पहुँच गया। वहाँ महाराज श्रेणिक एवं नगर सेठ सुदर्शन को भी देखा। महाराज श्रेणिक ने उसे गिरफ्तार करने को हजारों रुपयों का इनाम घोषित कर रखा था। समवसरण में पहुँचते ही उसका जीवन बदल गया और वह जैन साधु बन गया।

भगवान महावीर का समवसरण वैशाली आया। वहाँ महाराज चेटक के सातपुत्र उपदेश से प्रभावित होकर राजपाट त्याग मुनि हो गये। प्रधान सेनापति सिंहभद्र ने सैनिक अवस्था का त्यागकर अहिंसा धर्म के अंतर्गत श्रावक व्रत ग्रहण कर लिये। वैशाली के निकट वाणिज्य में सेठ आनंद एवं सेठानी शिवानंदा ने अनेक व्यापरियों के साथ श्रावक व्रत ग्रहण किये।

इसी प्रकार भागलपुर में महाराज अजातशत्रु जैन मुनि हो गये। चंपानगरी के प्रसिद्ध सेठ सुदर्शन को अभया रानी ने मिथ्यादोष लगाया था किन्तु सेठ निर्दोष सिद्ध हुए और उन्होंने भगवान के समक्ष दि. मुनि पद ग्रहण किया। भगवान का विहार वाराणसी, कलिंग, पुंड, वंग, ताम्रलिप्त, कौशांबी, पांचाल, कांपिल्य, उत्तर मथुरा, दक्षिण मथुरा, कांचीपुर, हेमोंग, पोदनपुर, मालवा, राजपूताना, जयपुर, महावीर (पहोदा) दशार्ण, गुजरात, सिंधु, कच्छ, लाह, पंजाब, काश्मीर आदि देशों में अर्थात् समग्र भारत में विहार हुआ था। इनमें अनेक राजा, सेठ आदि ने मुनि एवं श्रावक के व्रत ग्रहण कर आत्मकल्याण किया था। भगवान का विहार भारत में ही नहीं अपितु बाहर देशों में भी हुआ। युवनश्रुती (यूनान) में 58 ई.पू. में उत्पन्न दार्शनिक विद्धान पैथागोरस के ऊपर वीर सिद्धांत का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपने देशवासियों को जीवात्मा, पुनर्जन्म कर्म सिद्धांत में विश्वास करने की शिक्षा दी। हिंसा और मांसाहार से दूर रहने की प्रेरणा दी। वनस्पति में जीव रहते हैं यह बताया। यूनान की राजधानी एथेंस में धर्म शास्त्री सोलन क्रीसस नामक राजा के दरबार में गया। क्रीसस ने अपने को संसार में सर्वाधिक धनवान बताया। सोलन ने उसे संतोष का महत्व बताकर उसका समाधान किया। कालांतर में फ्रांस के राजा साइरस ने क्रीसस पर विजय पाकर उसे जीवित जला देने का आदेश दिया। उस समय उसे सोलन की याद आई और तीन बार उसका नाम लिया और उसके प्रभाव से जीवन दान मिला।

सुकरात और उसके प्रमुख शिष्य प्लेटो जिनका अफलातून नाम प्रसिद्ध था, जिनको यूरोप के लोग ज्ञानगुरु मानते थे, महावीर के सिद्धांतों का आचरण करते थे। सुकरात के समकालीन डायोजिनीज भी वीर प्रभाव से विशिष्ट ज्ञानी हो गये थे। वे नग्न होकर आत्मज्ञान में मग्न रहते थे। यूनान का राजा मनेन्द्र 500 यूनानी विद्वानों के साथ भारत में जैनधर्म की चर्चा करने आया। यहाँ के जैन साधुओं से प्रभावित होकर वे सब जैन साधु हो गए। भ.महावीर के भक्त यूनान के राजाओं ने ध्यान हेतु भगवान की मूर्ति स्थापित की थी। **जैन मुनि संघ ने इटली, नारवे आदि देशों में जाकर धर्म प्रचार किया था।** डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार चीन के लोन्से वे कनफ्यूशियस यूनान में पेरमेनोडेस व एम्पोडोक्लज और ईरान में जरथुस्त्र आध्यात्मिक संत हुए हैं। ईरान का राजकुमार अर्दक भगवान की प्रशंसा सुनकर भारत आया और 500 ईरानियों के साथ भगवान के उपदेश से प्रभावित होकर दि. जैन मुनि बन गया। फिलिस्तीन में महात्मा मूसा वीर के समकालीन थे। उनके जीवन में धार्मिक सिद्धांत एवं शिक्षायें भगवान के प्रभाव का परिणाम था।

क्वाथरहांय जिसका जल क्वाथ अर्थात् लाल कहा जाता है, रेडसी के पास का क्षेत्र एवेसिनिया, अरब आदि देश हैं, जैनधर्म से प्रभावित थे। सुरमिरू (मध्यऐशिया) के स्पीनरुस के पास ओक्सस पर जो आजकल का खिवानगर है, में जैनधर्म का प्रभाव था।

सिंध सौवीर का जो आजकल पाकिस्तान का भाग सिंध है, राजा वीर के समय उदायन था। इसकी रानी प्रभावती महाराज चेटक की पुत्री थी। वीर के इतने भक्त थे कि वीर प्रभु के जीवनकाल में ही उन्होंने मंदिर व चंदनमूर्ति स्थापित की थी। उसके चमत्कारों को सुनकर उज्जैन के महाराज चंद्रप्रद्योत ने उसे चोरी से मंगवा ली। उद्दायन ने वापस करने को कहा किन्तु हुन्कार (इंकार) करने पर विशाल सेना लेकर युद्ध करने को तत्पर हुआ। युद्ध में चन्द्रप्रद्योत को बन्दी बनाकर मूर्ति वापस ले आया। रानी सहित उद्दयान सम्यग्-दृष्टि श्रावक-श्राविका थे। दशलक्षण व क्षमावाणी पर्व पर चन्द्रप्रद्योत को छोड़ दिया राज्य भी लौटा दिया। अंत में दोनों साधु साध्वी हो गये। केकी प्रांत (गांधार) की राजधानी कंधार थी। वहाँ के राजा सात्मक की सगाई महाराज चेटक की पुत्री ज्येष्ठा के साथ हुई थी। ज्येष्ठा भगवान का समवसरण आने पर वहाँ प्रभावित होकर साध्वी हो गई।

कामवीज (विलोचीस्थान) तथा तक्षशिला में भगवान का विहार हुआ वहाँ खुदाई में जैन पुरातत्व समाग्री प्राप्त हुई। अशुवात (वर्तमान काबुल) और आरट्ट (पंजाब) हड़प्पा जिला मनुटगुमटी भद्र पंजाब की और रावी चिनाब नदियों के मध्य का क्षेत्र। यह पुरातत्व सामग्री का क्षेत्र है। हंगरी यूरोप में एक नगर है, जहाँ एक अंग्रेज को बगीचे में भूमि खोदते हुए महावीर की पद्मासन मूर्ति मिली। इससे सिद्ध है कि यूरोप में भी महावीर पूजा होती थी। हंसद्वीप (लंका) राजा रत्नचूल था। जिस पर श्रेणिक का प्रभाव था और उसके निमंत्रण पर भारत आया था। इस प्रकार अफगानिस्तान, एथोविया, अरब, वर्मा, जर्मनी, मध्य ऐतिहासिक विद्वानों के अनुसार एशिया, लंका, चीन, मिश्र, फ्रांस, जर्मनी, यूनान, आस्ट्रेलिया, इण्डोनेशिया, जावा, ईरान, जापान, तिब्बत आदि देशों याने आर्यावर्त (समस्त संसार) में ऐतिहासिक विद्वानों के अनुसार भगवान महावीर के आस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं। पुराणों में भी ऐसा ही लिखा हुआ मिलता है।

(महावीर जयंती स्मारिका जयपुर राजस्थान जैन सभा

दिगम्बर दास एडवोकेट)

जैन शासक

भगवान ऋषभदेव के समय उनके पुत्र भरत प्रथम चक्रवर्ती और बाहुबलि पोदनपुर नरेश हुए। उनके समय विविध देशों के अनेक राजा पुराण में प्रसिद्ध है। सगर आदि का वर्णन भी तीर्थंकरों के समय में दे दिया गया है। भगवान महावीर के समय ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष यह है- ई.पू. छठी शताब्दी में काशी नरेश शिशुनाग ने मगध पर अधिकार कर लिया। इस वंश के प्रथम प्रतापी नरेश श्रेणिक (बिंदुसार) भगवान महावीर के भक्त थे। श्रेणिक ने अंगदेश व छोटे-छोटे राज्यों को जीत कर उन्हें अपने राज्य में मिला लिया था और सम्राट् पद पा लिया था। उनका पुत्र कुणिक (अजातशत्रु) भी वैशाली के वज्जिसंघ कौशल आदि के राजाओं को जीतकर उत्तरी व मध्य भारत का सम्राट् बन गया। उनके पुत्र उदयन ने पाटलीपुत्र राजधानी बनाई।

सन् 467 ई.पूर्व में राज्यक्रांति हुई। उसमें नन्दवंश ने मगध पर अधिकार जमा लिया। इस वंश में नंदिवर्धन प्रतापशाली सम्राट् हुआ। उसने कलिंग पर विजय प्राप्त की। इस वंश के महापद्म सम्राट् के राज्यकाल में 327 ई.पूर्व सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया। परन्तु इसकी सीमा में प्रवेश नहीं कर सका।

सन् 327 ई.पूर्व मगध में पुनः राज्य क्रांति हुई। चन्द्रगुप्त ने चाणक्य की सहायता से युद्ध करके मगध पर अधिकार जमा लिया। ध्यान रहे ये जैन धर्मानुयायी थे। साम्राज्य की व्यवस्था भलीभांति करने के पश्चात् अवंति पर विजय प्राप्त की और उज्जयिनी को अपनी राजधानी बनाई। फिर दिग्विजय हेतु दक्षिण गये। महाराष्ट्र, कोकण, कर्नाटक, तमिल आदि देशों पर विजय प्राप्त कर ली। यूनान के सेल्युकस ने इसके राज्य पर आक्रमण किया उसे पराजित कर उससे पंजाब, सिंध, काबुल, कंधार व हिरान देश लेकर अपने साम्राज्य की वृद्धि की। इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य समस्त भारत का सम्राट् बन गया। सन् 298 ई.पू. चन्द्रगुप्त के गुरु भद्रबाहु जैनाचार्य ने यह जानकर कि उत्तर व मध्य भारत में 12 वर्ष का दुर्भिक्ष पड़ेगा, 12 हजार मुनियों को लेकर दक्षिण प्रदेश की ओर विहार किया। चन्द्रगुप्त भी अपने पुत्र बिंदुसार को राज्य देकर दक्षिण में श्रवणबेलगोला चले गये और वहीं जैनेन्द्री-दिगम्बरी निर्ग्रन्थ मुनि दीक्षा ले ली। इनके राज्य में यूनानी राजदूत मेगास्थनीज रहता था। उसने उस समय भारत की जो दशा थी, उसका वर्णन किया है। उस समय भारत समृद्ध और सुखी था जनता ताले नहीं लगाती थी। वहाँ चोर नहीं थे। बिंदुसार का पुत्र अशोक, जिसने कलिंग पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की। युद्ध में लाखों व्यक्तियों का संहार हुआ जिससे उसका हृदय हिंसा से विरत हो गया जब विजय करके मां से आशीर्वाद मांगा तो माँ ने कहा, बेटा, लाखों लाखों स्त्रियों का सिन्दूर पोंछकर उन्हें विधवा कर और लाखों को पुत्रहीन बनाकर तू आशीर्वाद मांग रहा है। इस करुणापूर्ण वाणी को सुनकर अशोक का हृदय दयार्द्र हो गया और वह विरक्त होकर पूर्ण अहिंसक बन गया।

अशोक के अहिंसा के समर्थक अनेक शिलालेख प्रसिद्ध है। शांति और सदाचार से रहने के आदेश शिलाओं पर अंकित है। उसका उत्तराधिकारी पौत्र संप्रति नरेश हुआ। उसने भी अपने पितामह के समान शिलालेख लिखवाये। जैनधर्म के प्रचार प्रसार हेतु विद्धानों को भारत के बाहर भेजा। मौर्य वंश का राज्य मगध में 184 ई.पू. व उज्जयिनी में 164 ई. तक रहा। इन तीनों राज्यवंशों का धर्म जैन था।

(जैनधर्म- श्री रतनलालजी जैन अ.दि.जैन परिषद पब्लिशिंग हाउस दिल्ली)

कुछ इतिहास अशोक को बौद्ध मानते हैं, परन्तु कुछ जैन मानते हैं क्योंकि अशोक के शिलालेख जैनधर्म के अधिक निकट है। पशुवध व जीवहिंसा रोकने के लिए जो नियम बनाये वे जैनधर्मानुकूल हैं। जीवहिंसा निषेध की आज्ञा जारी की थी। चाणक्य के अर्थशास्त्र में कथित 56 पवित्र दिन जैन परम्परा से मेल खाते हैं। शिलालेखों में नियमों (जैन दिगम्बर मुनियों) का विशेष आदर करने का उल्लेख है। विद्वानों का यह विशेष रूप में मत है कि अशोक एक महान प्रजा पालक सम्राट् था जिसने प्रजा के नैतिक उत्थान हेतु नवीन असांप्रदायिक धर्म लोक के सन्मुख उपस्थित किया था।

कलिंग के सम्राट् खारवेल जो जैन धर्मानुयायी था, जिसने मुनियों का एक विशाल सम्मेलन बुलाकर सरस्वती आंदोलन द्वारा मौखिक रूप से चली आ रही द्वादशांग श्रुत वाणी को लिपिबद्ध कराने की योजना बनाई थी, जो मेघबाहन खारवेल नाम से प्रसिद्ध था, इसका राज्याभिषेक 166 ई.पूर्व हुआ था। इसी ने यूनानी त्रिमित्र को पाटलीपुत्र से मथुरा तक खदेड़ कर मथुरा, पंजाब, पांचाल, आदि देश पर अधिकार किया था। मगध राजा को इसने पराजित किया ही था इसने अनेक लोक कल्याणकारी कार्य किये। जिसका प्रमाण खंडगिरि पर्वत की हाथी गुफा के लेखों से उसके कार्यों का परिचय मिलता है।

कलिंग नरेश खारवेल ने मालवा पर अधिकार करके अपना एक राजकुमार शासक नियुक्त कर दिया। सन् 74 ई.पू. इस वंश का महेन्द्र विजय भिल्ल राज्य करता था। वह दुराचारी था। शकवाहियों की सहायता से गर्दभिल्ल उज्जयिनी से निकाल दिया गया। शकों का राज्य पर अधिकार हो गया। उज्जयिनी की प्रजा ने विक्रमादित्य के नेतृत्व में ई.पू. 57 में उज्जयिनी को स्वाधीन कर लिया। इस विजय के उपलक्ष्य में **विक्रमसंवत का प्रारम्भ** हुआ। यह राज्य वंश जैनधर्मावलंबी था। उज्जयिनी जैनधर्म का केन्द्र थी।

शकवाहियों ने 66 ई.पू. सौराष्ट्र को जीतकर उसकी राजधानी वसुंधरा बनाई। इसी वंश के राजा नहपान या नरवाहन ने 26 ई.पू. तक राज्य किया और दि. जैन मुनि दीक्षा लेकर षट्खण्डागम (आचार्य धरसेन के शिष्य भूतबलि, एवं आचार्य पुष्पदंत के सहपाठी) की रचना की जिसकी धवला टीकायें प्रसिद्ध हैं। ये टीकायें 9वीं शताब्दी के आचार्य वीरसेन स्वामी कृत है। नहपान के सेनापति का पुत्र भद्रचष्टन वीर और योद्धा था। सन् 78 ई.पू. में इसने उज्जयिनी पर आक्रमण कर इस विजय के उपलक्ष्य में **शक संवत् प्रारम्भ** किया। इसी वंश का भद्रदमन प्रतापी राजा था जो जैनधर्मानुयायी था और इसका लगभग 100 वर्ष तक राज्य चला।

छठी शताब्दी में हुएनसांग चीनी यात्री ने बंगाल में अनेक जैन बस्तियों में जैन मंदिर और जैन मुनि विहार करते हुए देखे थे। वीरभूमि, वर्धमान, सिंहभूमि, मानभूमि आदि नगरों के नाम, जैन प्रतिमायें, प्राचीन जैन **सराकजाति** की जनता में जैनधर्म फैला हुआ देखा था। जैन प्रतिमायें भैरव आदि के रूप में परिवर्तित देखी गईं थीं।

सन् 319 ई. में गुप्त साम्राज्य की नींव चन्द्रगुप्त द्वारा डाली गई थी। इस वंश का राजा समुद्रगुप्त महान विजेता था। इस वंश के अनेक राजा वैष्णव व बौद्ध हुए। पीछे सम्राट् देवगुप्त जैन धर्मानुयायी हुआ छठी शताब्दी में वंश शक्तिहीन होने लगा।

756 ई. में नागभट्ट ने अरबों और सिंध पर विजय प्राप्त कर पश्चिमी भारत, मालवा, गुजरात पर भी अधिकार कर लिया। इसने कन्नौज को राजधानी बनाई। इसके वंश के समस्त राजा जैनधर्मानुयायी थे। 11वीं शताब्दी तक इस वंश का राज्य चलता रहा।

अजमेर के चुहान राजाओं में विग्रह राज 10 वीं शताब्दी में जैनधर्म का भक्त था। ई.सन् 974 में धारा के परमार वंशीय सीयक राजा हर्ष अपने विस्तृत राज्य मुंज को अधिकार देकर दिगम्बर मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली। मुंज और भोज (1010-1030) जैनधर्म के पोषक थे। धारानगरी जैनधर्म की केन्द्र थी। 10 वीं शताब्दी में अवध और रूहेल खंड का राज्य ध्वज वंश के रूहेल के आधीन था। इसने मोहम्मद गजनी के सेनापति सैयद सालार मसऊद को पराजित किया था। बिजनौर जिले का पार्श्वनाथ किला व मोरध्वज किला इसी पंथ के शासकों द्वारा निर्मित हुए थे।

लगभग 900 ईसमी में हर्षचन्देल ने चंदेल वंश को उन्नत किया था इसी वंश के राजा च्यंग (945-1000) के आश्रय में **खजुराहो** के प्रसिद्ध जैन व वैष्णव मंदिर बने हैं। 12 वीं शताब्दी में कच्छप षट वंशीय महेशनंद व विक्रम राजाओं ने ग्वालियर सोहनिया आदि स्थानों पर जैन मंदिर, **ग्वालियर किले** में पार्श्वनाथ प्रतिमा एवं दीवारों पर तीर्थंकरों की मूर्तियाँ अंकित करवाई।

लगभग 535 ई. में गुप्त साम्राज्य में सौराष्ट्र सेनापति मंत्रक वंशीय भटार्क के पुत्र धरसेन ध्रुवसेन ने वल्लभी को राजधानी बनाई जो जैनधर्म को मानते थे। इसी वल्लभी में श्वेताम्बर साधु सम्मेलन में वाचना (श्रुत रचना) हुई थी।

आठवीं शती के अंत में राष्ट्रकूट वंशी शाखा गुजरात पर अधिकार कर स्वतंत्र हुई। कर्क राजा और उसके वंशज जैनधर्मानुयायी थे। नवसारी में जैन विद्यापीठ की स्थापना हुई।

900 ई. में मूलराज सोलंकी (दक्षिण के चालुक्य वंश की शाखा) गुजरात का अधिपति बना। इस वंश के नरेश जयसिंह सिद्धराज व कुमार पाल (12वीं शताब्दी) जैनधर्म भक्त थे तथा प्रसिद्ध आचार्यश्री हेमचन्द्र उसके गुरु थे।

दसवीं शताब्दी में चूड़ावंश के राजा वनराज ने अणहिल्ल पाटन को राजधानी बनाई। इस वंश के राजा दांत वर्मा वीर एवं प्रतापी थे। महाराज जयसिंह जैनधर्मानुयायी एवं विद्यानुरागी थे। दसवीं शताब्दी में राजस्थान के हयोड़ी नगर के राठौर राजा जैन थे और जैन मंदिरों का निर्माण किया था।

बंगाल में पंचम शती से पूर्व ताम्रलिप्त बंदरगाह पर जैन विहार थे। सातवीं शती में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने वहाँ बहुत से जैन साधुओं को देखा था।

छठी शताब्दी तक दक्षिण के पल्लव व पांडय राजवंश जैनधर्मानुयायी रहे। तीसरी शताब्दी तक चौल राज्य के राजा जैनधर्मावलंबी रहे कोलुतुंग वीर एवं पराक्रमी राजा था जो जैन धर्म का उपासक था।

प्रथम शताब्दी के चेर राज्य के राजा मयूर वर्मन् जो द्वितीय शताब्दी में हुए हैं, उनके द्वारा पल्लव

राज्य पराजित हुआ। पश्चात् शिवकोटि राजा आचार्य समंतभद्र द्वारा जैनधर्म में दीक्षित हुए।

पीछे इनका वंश जैनधर्मावलंबी रहा। इस प्रकार छठी शताब्दी में उन्नत दशा में रहकर धीरे-धीरे 13वीं शताब्दी तक चलता रहा।

कर्नाटक (मैसूर) का गंग वंश दूसरी शताब्दी में स्थापित होकर दसवीं शताब्दी तक उन्नत बना रहा और जैनधर्म का उपासक रहा। इसी वंश के श्री पुरुष राजा (आठवीं शताब्दी) ने जैन श्रावक के व्रत ग्रहण किये। दसवी शताब्दी के सम्राट् मारसिंह ने भी मालवा पर विजय प्राप्त कर पल्लव, चेर, चोल, पांड्य राजाओं को पराजित कर जैनमंदिर बनवाये। अंत में श्रावक के व्रत ग्रहण कर लिए।

मारसिंह सम्राट् के मंत्री वीरचामुंडराय ने श्रवणवेलगोला में बाहुबलि स्वामी की 57 फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा विंध्यगिरि पर निर्माण कराई। गंगवंश की एक शाखा पांचवी शती में कलिंग देश को चली गई। वहाँ ग्यारहवीं शती तक राज्य किया। पश्चिमी चालुक्य वंश के स्थापक पुलकेशी नरेश महान वीर थे। बादामी को राजधानी बनाकर 535 ईस्वी से 565 ईस्वी तक राज्य किया। यह जैनधर्म के उपासक थे। इसी वंश में पुलकेशी तृतीय 7वीं शताब्दी में हुआ जो पल्लव, आंध्रदेशों को जीतकर दक्षिण पथ का सम्राट् बन गया। यह जैनधर्म का उपासक था।

इसी पुलकेशी तृतीय ने बादामी और अंजना के गुफा मंदिररों में कलाकारों द्वारा भित्तियों पर अद्वितीय चित्र निर्माण कराये। अंत में यह पल्लवों द्वारा पराजित होकर युद्ध में मारा गया। इसका पुत्र विक्रमादित्य वीर और साहसी था। उसने पल्लवों को युद्ध में जीतकर अपना राज्य दृढ़ किया।

द्वितीय शताब्दी में पूर्वी चालुक्य शाखा के अम्भ द्वितीय नरेश (995-97) प्रतापी और जैन धर्मानुयायी था। यह राज्य भी 11वीं शताब्दी तक रहा। दुर्गराज अम्भ का सेनापति जैनधर्म का उपासक था। जो 10वीं शताब्दी तक आंध्र प्रदेश में जैनधर्म का प्रभाव था। इस वंश के राजा अधिकतर जैनधर्मानुयायी थे।

ई.सन् 752 में राष्ट्रकूट राजवंश के दत्तिवर्ग सम्राट् ने एलोरा को राजधानी बनाई और जैनाचार्य विमल का विशेष आदर किया। यह शैव था किन्तु अन्य धर्म का विरोधी नहीं था। इसी वंश में गोविन्द तृतीय सम्राट् की राजधानी मान्यखेट थी। आठवीं शताब्दी में इसके राज्य का शासक इसका पुत्र अमोघवर्ष हुआ जिसने नवमीं शताब्दी में राज्य किया और जैन धर्म का उपासक रहा। इसके गुरु महापुराणकर्ता आचार्य जिनसेन थे, जिन्होंने आ. वीरसेन के बाद जयधवला की टीका भी लिखी। सम्राट अशोक संस्कृत व कन्नड़ भाषा के विद्वान एवं धार्मिक थे। राष्ट्रकूट साम्राज्य का अंतिम राजा इन्द्र 974 ई. में राज्य त्याग कर मुनि हो गया था।

कल्याणी का चालुक्य और वीर तैलप राष्ट्रकूटों को पराजित कर साम्राज्य अधिपति बना यह जैनधर्म का उपासक था। इस वंश का विक्रमादित्य नरेश (1076-1128) अंतिम था। पश्चात् 12वीं शताब्दी तक चलता रहा। कल्याणी के कलचूरि विज्जल चालुक्यों के सेनापति थे 1156 में चालुक्य नरेश तैलप (तृतीय) को बन्दी बनाकर साम्राज्य अधिकार कर लिया। विज्जल सम्राट् जैनधर्म का उपासक था।

कोकण का विजयादित्य शलाहार (1140-1165) पराक्रमी था। यह जैनधर्म का उपासक था।

द्वारसमुद्र का होयसल वंश जैनधर्म का उपासक था। 12वीं शताब्दी में शक्तिशाली रहा। इस वंश का नरेश विष्णुवर्धन महान योद्धा था। इसका राज्य 12वीं शताब्दी में द्रविड़ के अनेक राजाओं को जीतकर सुदृढ़ बना रहा। इसका सेनापति गंगराज पराक्रमी एवं जैनधर्मानुयायी था। इसी वंश का राजा वल्लाल द्वितीय (1171-1220) बड़ा वीर था। 1326 ई. में मोहम्मद तुगलक ने आक्रमण करके इस राज्य का अंत कर दिया। संगम सरदार के पांच पुत्रों ने 1336 ई. में तुंगभद्रा के तट पर हम्बी स्थान पर विजयनगर बसाया।

1346 में हरिराय का राज्यभिषेक हुआ। इस वंश का देवराय द्वितीय (1419-1446) जैनधर्मानुयायी था। उसके राज्य में नेमिचन्द्र जैनाचार्य ने शास्त्रार्थों में अन्य विद्वानों पर विजय प्राप्त की। सन् 1564 में विजयनगर पर मुसलमानों का अधिकार हो गया।

दक्षिण भारत में विजयनगर साम्राज्य के 1564 ई. में पतन के पश्चात् राजा, सामंतवीरों की संख्या कम होने लगी। दिगम्बर गुरु एवं प्रभावशाली विद्वान भी कम होने लगे। इसका कारण जैनधर्मानुयायियों पर आक्रमण और उनके मंदिर मूर्तियों का विध्वंस, जैन बस्तियों का नाश आदि हैं। दक्षिण कर्नाटक एवं वहाँ के तीर्थों की स्थिति बनी रही अत: वहाँ जैनधर्म व जैनधर्मावलंबी आज तक हैं।

जैनधर्म और तीर्थंकर-

हमारे शरीर में ज्ञान दर्शन रूप चेतना शक्ति वाला आत्म द्रव्य है। उसकी निर्मलता के बाधक अनादि काल के शत्रु क्रोध, मान, माया, मोह, लोभ, राग, द्वेष, काम विकार आदि हैं, जो अनादिकाल से इसी जीव ने अपने विपरीत पुरुषार्थ से उत्पन्न कर अपने साथ एक क्षेत्रावगाही कर्मरूप में बाँध रखे हैं। उन्हीं के कारण यह दु:खी और संसारी बना हुआ है। उन विकारों को अपने संयम और त्याग द्वारा जिन्होंने नष्ट किया है वे **जिन** कहलाते हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म को **जैनधर्म** कहते हैं। ऐसे वस्तु स्वरूप जैनधर्म के प्रथम उपदेशक प्रथम तीर्थंकर (धर्म प्रर्वतक) ऋषभदेव हुए। मूलरूप में द्रव्य दो हैं जीव और अजीव। जीव दो प्रकार हैं संसारी (कर्मसबंद्ध) और मुक्त (कर्मरहित) प्रथम ऋषभदेव, बीसवें मुनिसुव्रत, इक्कीसवें नमिनाथ, बावीसवें नेमिनाथ, तेइसवें पार्श्वनाथ और चौबीसवें महावीर तीर्थंकर इस प्रकार चौबीस तीर्थंकर हुए हैं।

निरंतर......

गतांक त्रुटि सुधार

भाव विज्ञान पत्रिका अंक पचास, दिसम्बर 2019 में प्रकाशित में हुई त्रुटियों को निम्नानुसार सुधार किया जाकर पढ़ने का अनुरोध है :-

(1) प्रश्न 555 के उत्तर की तीसरी लाइन में ''कुल 49 पटल''।

(2) प्रश्न 559 के उत्तर की चौथी लाइन में ''एक-एक दिशा में 49-49''।

(3) प्रश्न 618 के उत्तर की प्रथम लाइन में ''धातकीखण्ड द्वीप, कालोदधि समुद्र, पुष्करवर द्वीप''।

(4) प्रश्न 623 के उत्तर में ''धातकीखण्ड''।

(5) पृष्ठ क्रमांक 17 की अंतिम लाइन में ''बाईसवें तीर्थंकर''।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी का सोनागिर विहार करते हुए का एक पावन दृश्य।

आ.श्री. आर्जवसागरजी की सोनागिरि में मंगल प्रवेश पर अगवानी करते हुए भक्तगण।

सोनागिर मंगल प्रवेश पर आ.श्री आर्जवसागरजी की अगवानी करते क्षेत्रस्थ साधुवृन्द।

सि.क्षे. सोनागिर फाल्गुन आष्टाह्निका पर्व पर भ.चन्द्रप्रभु का दर्शन करते हुए आ.श्री आर्जवसागरजी ससंघ।

सोनागिर जी में नव दीक्षित मुनिश्री 108 विभोरसागरजी महाराज का दीक्षा संस्कार एवं पिच्छी प्रदान करते हुए आ.श्री. आर्जवसागरजी महाराज।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी सि.क्षे. सोनागिर जिनालय के मुख्य द्वार पर।

ललितपुर में संघस्थ आर्यिका द्वय गुरुदर्शन करते हुए।

अतिशय क्षेत्र सेरोन जी में आ.श्री आर्जवसागरजी ससंघ।

अतिशय क्षेत्र सेरोन जी में भ. शान्तिनाथ का दर्शन करते हुए आ.श्री आर्जवसागरजी ससंघ।

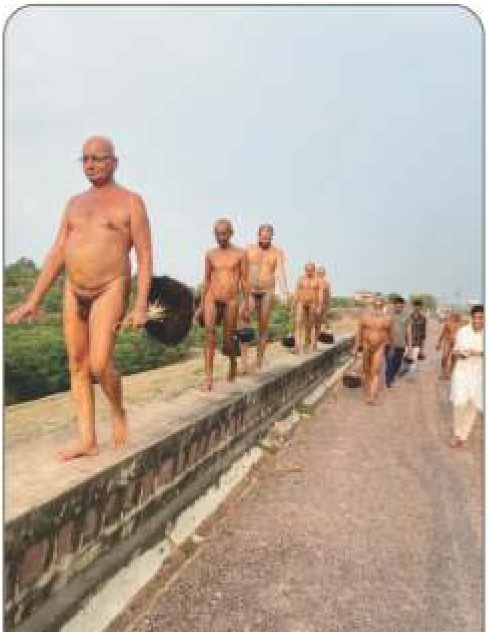

राजघाट बाँध पर विहार करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ।

राजघाट बाँध के किनारे चलते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

अतिशय क्षेत्र देवगढ़ में दर्शन करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ।

अ.क्षे. देवगढ़ में भ.शान्तिनाथ के पद कमलों में शांतिधारा के दौरान आ.श्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ।

अ.क्षे. थुवोन जी के बड़े बाबा भ.आदिनाथ के दर्शन करतीं आ.श्री प्रतिभामति व आ.श्री सुयोगमति जी।

ललितपुर नगर प्रवेश पर आ.श्री आर्जवसागर जी की आगवानी करते मुनिश्री विनश्चलसागर जी ससंघ।

ललितपुर में आ.श्री आर्जवसागरजी ससंघ की आगवानी में पधारी आर्यिकाश्री प्रतिभामति व आ.श्री सुयोगमति जी।

ललितपुर अ.क्षे. प्रवेश पर आ.श्री आर्जवसागर जी की अगवानी करते हुए पंचायत अध्यक्ष अनिल अंचल आदि।

॥ भ.पार्श्वनाथाय नम: ॥ ॥ भ. अभिनन्दननाथाय नम: ॥ ॥ आ. शांतिसागराय नम: ॥

अध्यात्म-योगी धर्म-प्रभावक आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का

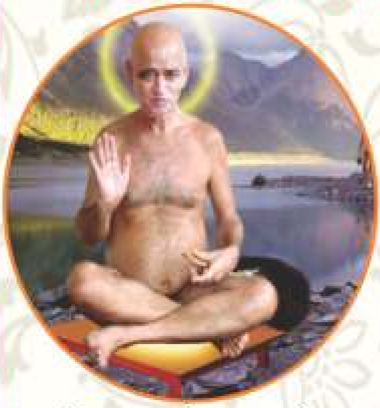

आचार्य प्रवर 108 विद्यासागरजी महाराज

पावन-वर्षायोग सन् 2020

स्थल-
श्री १००८ अभिनंदननाथ जिनालय परिसर, अ.क्षे. क्षेत्रपाल, ललितपुर (उ.प्र)

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज

मुनिश्री108
महानसागरजी महाराज

मुनिश्री108
भाग्यसागरजी महाराज

मुनिश्री108
महत्सागरजी महाराज

मुनिश्री108
विलोकसागरजी महाराज

मुनिश्री108
विबोधसागरजी महाराज

मुनिश्री108
विदितसागरजी महाराज

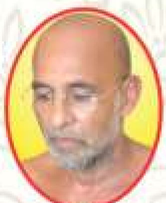

मुनिश्री108
विभोरसागरजी महाराज

दैनिक-चर्या

प्रात: 6 गुरुभक्ति
प्रात: 6:15 बजे- मूलाचार
प्रात: 8:30 बजे- आशीर्वचन
प्रात: 9:45- आहार चर्या
प्रात: 11:45-ईर्यापथ भक्ति एवं सामायिक
दोपहर 3 बजे- गोम्मटसार-कर्मकाण्ड
सायं 4:30 बजे- शंका समाधान
सायं 5:30 बजे- प्रतिक्रमण
सायं 6:30 बजे गुरुभक्ति, आरती, धार्मिक पाठ आदि
सायं 7:00 बजे-ध्यान आदि

पावन पर्व

शनिवार, 4 जुलाई- वर्षायोग प्रतिष्ठापन
रविवार, 5 जुलाई- गुरुपूर्णिमा व चातुर्मास कलश स्थापना कार्यक्रम
सोमवार 6 जुलाई-वीर शासन जयंती
रविवार, 26 जुलाई-मोक्ष सप्तमी (भ.पार्श्वनाथ निर्वाण महोत्सव)
सोमवार, 3 अगस्त-रक्षाबंधन महापर्व (भ.श्रेयांशनाथ मोक्ष कल्याणक)
सोमवार, 3 अगस्त से गुरुवार, 3 सितंसबर तक षोडसकारण महापर्व प्रारम्भ
गुरुवार, 20 अगस्त- चा.च. आ.शांतिसागर समाधि दिवस
रविवार, 23 अगस्त से मंगलवार, 1 सितम्बर तक दशलक्षण महापर्व महोत्सव
गुरुवार, 3 सितंबर-क्षमावाणी पर्व
रविवार, 15 नवंबर- दीपावली (भ.महावीर निर्वाण महोत्सव)
रविवार 22 नवंबर-चातुर्मास कलश वितरण आदि

श्रद्धानवत-श्री दि. जैन मंदिर क्षेत्रपाल कमेटी एवं सकल दि. जैन समाज ललितपुर (उ.प्र.)

कोरोना

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

कोरोना का संकट आया, शब्द-शब्द कोरोना।
देश का कोना-कोना कहता, स्वास्थ्य मिले बस कोरोना॥

हुई प्रकृति नाराज जगत् की, चारित्र विकृति का होना।
पशु-पक्षी की जान गँवाई, पेट भरा लख उनको ना॥
कोरोना का संकट आया, शब्द-शब्द कोरोना।
देश का कोना-कोना कहता, स्वास्थ्य मिले बस कोरोना॥

अन्याय-अनीति को अपनाया, लख विकास देश का ना।
धन रखा विदेश में जाकर, घूमा विदेश कोना-कोना॥
कोरोना का संकट आया, शब्द-शब्द कोरोना।
देश का कोना-कोना कहता, स्वास्थ्य मिले बस कोरोना॥

विदेशी फैशन वस्तुएँ लाई, विदेशी मुद्रा लालच आयी।
माँस निर्यात को दिया बढ़ावा, हाथ लगा संस्कृति खोना॥
कोरोना का संकट आया, शब्द-शब्द कोरोना।
देश का कोना-कोना कहता, स्वास्थ्य मिले बस कोरोना॥

संकट में प्रभु याद ही आते, पुण्य बढ़े सब दुख मिट जाते।
महावीर का जन्म मनाओ, करो प्रकाश कोना-कोना॥
कोरोना का संकट आया, शब्द-शब्द कोरोना।
देश का कोना-कोना कहता, स्वास्थ्य मिले बस कोरोना॥

वर्तमान में वर्द्धमान को, न भूलो, उन्हें याद करो।
लखो उन्हें हिय कपाट खोलो, भरो पुण्य, भव न खोना॥
कोरोना का संकट आया, शब्द-शब्द कोरोना।
देश का कोना-कोना कहता, स्वास्थ्य मिले बस कोरोना॥

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी
वीर निर्वाण संवत् 2546
तारीख 05-04-2020

दिगम्बर

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

दिक् है अम्बर
रहे दिगम्बर
अम्बर त्यागे
बने दिगम्बर
प्रकृति हि अम्बर
स्वयं दिगम्बर

आडम्बर सब
त्याग दिगम्बर
भोग-विलास न
पास दिगम्बर
नहीं राग में
वास दिगम्बर।

यथा जात है
रूप दिगम्बर
भगवन् सम हैं
पूज्य दिगम्बर
जिनको पूजें
रहे दिगम्बर।

परम दर्श जो
आदर्श दिगम्बर
ज्ञानवान जो
भगवान दिगम्बर
चरितवान सो
आचार दिगम्बर।

नहीं वासना,
शुद्ध दिगम्बर
चाह न तन सुख
सत्य दिगम्बर
अशुभ ध्यान न
परम दिगम्बर।

परम लक्ष्य शिव
सिद्ध दिगम्बर
शीलवान शुभ
भाव दिगम्बर
पर-उपकार
स्वोपकार दिगम्बर।

साम्य भाव है
सौम्य दिगम्बर
अनियत वासी
सजग दिगम्बर
नहीं स्वार्थ कुछ
स्वस्थ दिगम्बर।

ध्यान साधना
साध्य दिगम्बर
भव-वैरागी
श्रमण दिगम्बर
पूजित जीवन
नमन् दिगम्बर

28/05/2020
तालबेहट

गम नहीं

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

स्व-देश में बस सब यहीं,
कर्त्तव्य भी कुछ कम नहीं,
रोग शोक में जब नहीं,
घर में रहना गम नहीं।

गुरु पास न दूर कहीं,
सेवा, भक्ति रोज वहीं,
दान में अंतर हो नहीं,
घर में रहना गम नहीं।

कृषि है, धान्य भी कम नहीं,
कुएं में पानी कम नहीं,
गाय दूध भी कम नहीं,
घर में रहना गम नहीं।

मण्डी भी बाजू यहीं,
बैंक लोन का डर नहीं,
कर्जा माफी है यहीं,
घर में रहना गम नहीं।

गृह में बच्चे गम नहीं
गृहणी धार्मिक कम नहीं,
स्वार्थमयी जीवन नहीं,
घर में रहना गम नहीं।

दूर गाँव का काम नहीं,
भीड़-भाड़ का नाम नहीं,
कोरोना संकट नहीं,
घर में रहना गम नहीं।

दुकान किराना बस यहीं,
गृह सामग्री कम नहीं,
बाग-बगीचा सब यहीं,
घर में रहना गम नहीं।

चोर-डाकू भी पास नहीं,
शील-भंग का डर नहीं,
लोक अधिक संपर्क नहीं,
घर में रहना गम नहीं।

धूप चाहिए, तो यहीं,
हवा चाहिए छत यहीं,
खिड़की छज्जे भी यहीं,
घर में रहना गम नहीं।

टी.वी. देखें क्षेत्र यहीं,
गुरुपाठ शिक्षा यहीं,
प्रभु जाप में कमी नहीं,
घर में रहना गम नहीं।

गृह मंदिर दर्शन यहीं,
खोलें खिड़की प्रभु यहीं,
पूजा भक्ति कम नहीं,
घर में रहना गम नहीं।

त्याग, नियम से डर नहीं,
गृह तजना शिवमार्ग वहीं,
मोक्ष हो सच्चा घर वहीं,
कदापि मोक्ष में गम नहीं

02/05/2020, प्रस्तुति-राजेश जैन 'व्या' (फुटेरा), दमोह

निज

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

निज है आतम, चेतन जानो
ज्ञान दर्श मय जो होता।
देश नहीं निज, तन पुद्‌गल है,
पुद्‌गल तो जड़ ही होता॥

बँधा कर्म से अशुद्ध आत्मा,
भव में सुख-दुख मय होता।
कर्म बंध से मुक्त आत्मा,
विशुद्ध निज का सुख लेता॥

रागी आत्मा भोग राग से,
अशुभ कर्म का बंध करे।
निज आतम वह भोग त्याग से,
कर्म-बंध से मुक्त बने॥

कनक तपे जब तेज आग पर,
छोड़ कालिमा, पीत बने।
ध्यानि निजातम ध्यान अग्नि से,
शुद्ध बने सब पाप गलें॥

कर्मों की बेड़ी भव में ही,
बाँधे रहती निज को ही।
शुद्ध ध्यान के तीक्ष्ण अस्त्र से,
कटें बेड़ि निज की सब ही॥

भव के सुख दुख निज आतम से,
सदा दूर होते जानो।
निज ही निज से निज का निज में,
सुख पाता चेतन मानो॥

जग में चेतन, निज में चेतन,
शिव में भी चेतन जानो।
निज चेतन का खेल जगत् है,
कर्म मुक्त निज शिव मानो॥

निज ने निज को निज के द्वारा,
निज पाने को निज से ही,
निज का निज में ध्यान किया फिर
शाश्वत हुआ जु निज सो ही॥

10/05/2020
तालबेहट

कोरोना वैश्विक महामारी के कारण हुए लॉकडाउन में भाव विज्ञान पत्रिका के प्रकाशन पर भी प्रभाव पड़ा है जिसके कारण आपकी प्रिय पत्रिका का मार्च-जून 2020 का संयुक्तांक आपके स्वाध्याय हेतु प्रेषित है। साथ ही, आगम अनुयोग [प्रश्नोत्तर-प्रदीप] अगले अंक सितंबर-20 में शामिल की जावेगी। असुविधा के लिए खेद है।

''घर में रहें, स्वस्थ व सुरक्षित रहें''

काश!

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

''काश! विदेह में मैं होता,
तीर्थंकर दर्शन होता।''

दिव्यध्वनि का रस लेता,
अमृत-सा सुख पा लेता,
सोया भाग्य जगा लेता,
काश! विदेह में मैं होता,
तीर्थंकर दर्शन होता॥ 1॥

रागी-भेष न जहँ दिखता,
मिथ्या मत भी न लखता,
क्षायिक समकित मैं गहता,
काश! विदेह में मैं होता,
तीर्थंकर दर्शन होता ॥ 2॥

कल्याणक को नित लखता,
सुर-सेवा जँह मैं लखता,
जिनेन्द्र-पद नुति मैं करता,
काश! विदेह में मैं होता,
तीर्थंकर दर्शन होता॥ 3॥

चारण-मुनि सेवा करता,
ऋद्धि-ऋषि पद रज गहता,
मोक्ष सुमार्ग को अपनाता,
काश! विदेह में मैं होता,
तीर्थंकर दर्शन होता॥ 4॥

श्रुत केवली को पाता,
मुनिवन श्रुत में रम जाता,
द्वादशांग को अपनाता,
काश! विदेह में मैं होता,
तीर्थंकर दर्शन होता॥ 5॥

आतापन आदिक धरता,
ध्यानामृत निर्झर झारता,
अपूर्व निर्जरा को पाता,
काश! विदेह में मैं होता,
तीर्थंकर दर्शन होता॥ 6॥

घोर परिषह जहँ सहता,
उपसर्गों में सम धरता,
केवलज्ञानी बन जाता,
काश! विदेह में मैं होता,
तीर्थंकर दर्शन होता॥ 7॥

गुणस्थान पार जाता,
परम विदेही बना जाता,
देह छोड़ शिव को पाता,
काश! विदेह में मैं होता,
शिवपद पा फिर न आता॥ 8॥

02/05/2020
तालबेहट

जगत् शान्ति

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

शान्ति वरो हे! शांति प्रभो जिन, अशुभ, जगत् आपद आयी।
एक तरफ कुआँ दिखता है, दूजी ओर दिखे खाई।
शान्तिनाथ जी आप शरण हैं, मिले शान्ति हो सुखदायी॥

कहीं तूफान सबक देता है, सुख-सुविधाएं बिखरायीं।
मिल-जुल रहना भाई सभी तुम, राह रोकना दुखदायी।
शान्तिनाथ जी आप शरण हैं, मिले शान्ति हो सुखदायी॥

भारी रोग ने मार गिराया, जनता व्याकुल घबरायी।
रोजगार भी चौपट कीना, हालत नाजुक हुई भाई।
शान्तिनाथ जी आप शरण हैं, मिले शान्ति हो सुखदायी॥

अपने बिछुड़े पास न आते, सगे ढके मुख को भाई।
मंदिर छूटा पूजा छूटी, छूटे लेन-देन भाई।
शान्तिनाथ जी आप शरण हैं, मिले शान्ति हो सुखदायी॥

क्षेत्र दूर वे, साधु दूर वे, ज्ञान समस्या भी आयी।
शिक्षा केन्द्र भी सूने पड़ गये, जोखिम पड़ गयी कमाई।
शान्तिनाथ जी आप शरण हैं, मिले शान्ति हो सुखदायी॥

जनम-मरण व नाते रिस्ते, भय के कारण हैं भाई।
मात्र दूर से देखें करते-सेवा में भी भय भाई।
शान्तिनाथ जी आप शरण हैं, मिले शान्ति हो सुखदायी॥

सर्व जगत् में होय शान्ति बस, णमोकार जपना भाई।
भक्तामर व शांतिपाठ की, सीख गुरु ने बतलायी।
शान्तिनाथ जी आप शरण हैं, मिले शान्ति हो सुखदायी॥

22/05/2020
तालबेहट

निज का ध्यानी

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

जिन पर श्रद्धा जो करता।
निज पाने शिवपथ गहता॥

जिन का ध्यानी जिन बनता।
निज का ध्यानी निज रमता॥

जिन से निज तक जो जाता।
निज से वह न हट पाता॥

जिन-सम वह भी बन जाता।
घृतसम बन गुण महकाता

पर न साथ में ले जाता।
अपना निज ही संग जाता॥

ज्ञान, दर्श का है नाता।
ऐसी जिनवर की गाथा॥

जड़-तन यहीं बिखर जाता।
निज, पिंजड़े से उड़ जाता॥

निज से निज को ही पाता।
पर से फिर न कुछ नाता॥

निज का सुख निज में पाता।
पर न उसे कभी भाता॥

घृत न दुग्ध में फिर आता।
निज भी अक्षय सुख पाता॥

शाश्वत सुख को निज पाता।
पुनः लौट न भव आता॥

लोक शिखामणि कहलाता।
त्रिभुवन से पूजा जाता॥

11/05/2020
तालबेहट

जिन

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

जिन सम जित हो,
जिनेन्द्र बनो,
पाप, कषायों को धो दो॥

इन्द्र-इन्द्रियाँ
जीते जो,
जितेन्द्रिय होता पूज्य अहो!

निज श्रद्धा से,
जैन बनो,
हिंसक वृत्ति पूर्ण तजो।

जैन हो दृष्टि,
नेक रखो,
अनेकांत की सीख गहो।

जैन दर्श सह,
चारित हो,
जैनीपन का पालन हो।

जैन कहो फिर,
व्यसन न हो,
जल गालन, दिन भोजन हो।

जिन का कहना,
न्याय रखो,
पाप कर्म से दूर रहो।

न मिथ्यात्वी,
भाव रखो,
वीतराग भज, दर्श गहो।

ज्ञान न बेचो,
लोभ तजो,
निःस्वार्थी बन सेवा हो।

नहीं छलो बस,
मान तजो,
भेद-भाव तज, पूज्य भजो।

जिन सम तुम भी,
ध्यान करो,
मुनि बन, भव को पार करो।

जिसका जीवन
जिन मय हो,
जिनेन्द्र बन, शिव पाय अहो!

11/05/2020
तालबेहट

कृषि करो या ऋषि बनो।

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

आदि प्रभो का है संदेश,
कृषि करना उत्तम उपदेश,
उपजे धान्य से उदर भरो,
कृषि करो या ऋषि बनो।

कृषि प्रधान हमारा देश,
शाकाहारी है परिवेश,
दया-भाव सब जीव धरो,
कृषि करो या ऋषि बनो।

धोखा, लोभ न जीवन हो,
पशुधन का भी पालन हो,
भोजन शुद्ध, सु-भाव रखो,
कृषि करो या ऋषि बनो।

स्वदेश रहो, संग देशी हो,
नहीं वेश पर-देशी हो,
भौतिक सुख से सदा बचो,
कृषि करो या ऋषि बनो।

कीट नाश न कभी करो,
अभय दान को हृदय धरो,
करुणा से अन्तस् भर लो,
कृषि करो या ऋषि बनो।

धूप सहो व ठंड सहो,
वर्षा का संग्रह कर लो,
जल, ईंधन न व्यर्थ करो,
कृषि करो या ऋषि बनो।

मेहनत से न कभी डरो
सदा हवा के मित्र बनो,
निरोगता से युक्त रहो,
कृषि करो या ऋषि बनो।

हरियाली में खूब रहो,
हरा-भरा शुभ जीवन हो,
प्रभु नाम जिन जाप जपो,
कृषि करो या ऋषि बनो।

11/05/2020
तालबेहट

जिन से निज

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

जिन में रम कर,
निज में खो जा।
निज में रम कर,
जिनवर बन जा॥

निज को निज में,
निज से प जा।
निज का वैभव,
निज में पा जा॥

जिन का ध्यानी,
निज का बन जा।
जिन सम बनकर,
भव से तिर जा॥

निज को पर से-
दूर हटा दे।
जिन सम शक्ति,
निज में पा जा॥

भव से तिरकर,
शिव में बस जा।
अनंत सुख से,
शाश्वत् सज जा॥

जिन सम मुक्ति,
तू भी पा जा।
निज आत्मा से,
आत्म समा जा॥

11/05/2020
तालबेहट

श्रुत में रम

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

श्रुत पंचमी
श्रुत में रम
मिटता गम
मिलता सम।

श्रु याने सुन
अंदर गुन
श्रुत को गुन
एक ही धुन।

त में लीन
हो तल्लीन
निज में लीन
हो स्वाधीन।

पन् से पञ्च
पाप को छोड़
व्रत को जोड़
जीवन मोड़।

च से चार
कषाय विसार
मोह को मार
संयम सम्हार।

मी से मीत
धर्म हो मीत
गुण गा गीत
बनो पुनीत।

प से पुण्य
दान हो पुण्य
तजो अपुण्य
हो जा धन्य।

र से रम
भक्ति में रम
मिटे सरम
कटें करम।

व से वर
उत्तम नर
शिव को वर
मोक्ष को घर।

श्रुत से ज्ञान
ज्ञान का मान
चरित महान
निज का ध्यान।

सच्चा ज्ञान
निज पहचान
हो उत्थान
मोक्ष महान।

ग्रंथ महान
गुरु महान
पर्व महान
करें प्रणाम।

27/05/2020
तालबेहट

खिले कमल

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

खिले कमल
बनो विमल
पंक नहीं, गुण करो अमल।
बनो सरल
रहो तरल
नहीं कठिन, अब बन कोमल।
बनो सबल
न दुर्बल
सदा बढ़ाओ आतम बल।
नहीं जगत् से
करना छल
अपना मानो दो सम्बल।
हो निर्मल,
न दल-दल
ऊपर होता यथा कमल।
पर में न निज
कभी बदल
शुक्ल मेघ सम रहो धवल।
कठनाइयों में
न हो चल
सत्य राह हो रहो सफल।
वीतराग के
मग में ढल
मोक्ष मिलेगा उत्तम फल।

29/05/2020
तालबेहट

स्वाश्रित बन

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

कहती प्रकृति स्वाश्रित बन,
दुःखी-पराश्रित है जीवन,
कर-सेवा में हो तन मन,
नौकर रख न, खो न धन
कहती प्रकृति स्वाश्रित बन॥ 1॥

कार्य करो नित, रहो मगन
न्याय-नीति से आता धन,
मेहनत हो वन रहे भवन,
कहती प्रकृति स्वाश्रित बन॥ 2॥

छोड़े परिश्रम, आलसी बन,
भोग-भोग में जाये मन,
मात्र पाप ही मिलता गम,
कहती प्रकृति स्वाश्रित बन॥ 3॥

छेड़-छाड़ न जल व वन,
नहीं प्रदूषण करो स्व-जन,
आपद् आती तन मन धन,
कहती प्रकृति स्वाश्रित बन॥ 4॥

स्वदेशी वस्तु संतोषी मन,
खाना मोटा, मोटा अन्न,
कर्ज नहीं स्व-निर्भर बन
कहती प्रकृति स्वाश्रित बन॥ 5॥

ज्ञान मात्र न हो जीवन,
अल्प ज्ञान हो भला चरण,
दान गुप्त, न लोभी मन,
कहती प्रकृति स्वाश्रित बन॥ 6॥

बहे रात-दिन यथा पवन,
धर्म-कार्य में सदा लगन,
करें प्रशंसा जग-जन-जन,
कहती प्रकृति स्वाश्रित बन॥ 7॥

जंगल हो या रहे भवन,
वीतराग में करो रमण,
होय सफल सारा जीवन,
कहती प्रकृति स्वाश्रित बन॥ 8॥

30/04/2020

तालबेहट

स्वार्थी-अतिथि

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

नाम ख्याति के लोभी कोई
अतिथि मंच पर आते हैं,
साधु संघ का बहुमूल्य वह,
समय व्यर्थ करवाते हैं।

गुरुगुण न, निज गुण गाकर,
गुरु आदर न दिखाते हैं,
ढोल शोर अधिक मचाते,
ताली जयकार करवाते हैं

माईक, माला, मंच के लोभी,
सम्मान बहुत करवाते हैं,
गुरु-वाणी को सुने बिना ही,
अपनी वाणी सुनाते हैं।

आत्म-प्रशंसक स्वार्थी अतिथि,
सभा-जन में न भाते हैं,
कुछ लोगों को स्वयं साथ ले,
मध्य में ही चले जाते हैं।

पूज्य पुरुषों के शिक्षा सूत्र बिन,
आशीष बिना ही जाते हैं,
आगे अपना मार्ग बंद कर,
जग को कभी न भाते हैं।

स्वार्थी वे कहलाते हैं।
स्वार्थी वे कहलाते हैं।

ललितपुर वर्षायोग 2020

साधना-प्रभावना

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

गुरु संघ में सत् साधना हो।
मात्र प्रभावना न, भावना हो॥

साधना का नाम है रटता।
बाह्य प्रभावना भाव जो रखता॥
बिना साधना भावना से,
स्वयं पुण्य को कम है करता॥

गुरु संघ से दूर जब हो,
साधना से दूर भी हो।
बाहरी उस प्रभावना से,
रत्नत्रय से बाह्य भी हो॥

ताम झाम व आडम्बर में,
मोह-माया व परिग्रह में,
दल-दल में फंस जाता है।
चिंताओं में दुःख पाता है।

मात्र व्यवहार भीड़ भाड़ में,
लौकिकता के व्यर्थ प्रभाव में,
साधुपने से परे भी हो।
अप्रभावना में भी रत हो॥

गुरु उपदेशों व संकेतों को,
जो जीवन में अपनाता है,
वही साधक निज जीवन में,
प्रभावना का सुख पाता॥

ललितपुर वर्षायोग 2020

वर्षायोग कहाँ होगा?

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

हरा भरा जीवन होगा,
वर्षायोग वहाँ होगा।

प्रासुक भी परिसर होगा,
वर्षायोग महा होगा।

श्रावक पुण्य बड़ा होगा,
वर्षायोग शुभं होगा।

ज्ञान-ध्यान में मन होगा,
वर्षायोग सुखद होगा।

दान-पुण्य-धर्म होगा,
वर्षायोग सुगम होगा।

पूजा-भक्ति में तन होगा,
वर्षायोग सजग होगा।

गुरु-सेवा जीवन होगा,
वर्षायोग सविनय होगा।

निःस्वार्थी मानव होगा,
वर्षायोग उन्नत होगा।

शालीनता का ढंग होगा,
वर्षायोग लवलीन होगा।

संयम मय जीवन होगा,
वर्षायोग निष्पृह होगा।

निरोगी स्वस्थ वतन होगा,
वर्षायोग प्रसन्न होगा।

जीव बचें जीवन होगा,
वर्षायोग अभय होगा।

धर्म-प्रभावना-पन होगा,
वर्षायोग उमंग होगा।

गुरुकृपा इच्छुक होगा,
वर्षायोग वरद होगा।

गृह पावन गुरु से होगा,
वर्षायोग अजब होगा।

अशुभ कर्म को जो धोगा,
वर्षायोग पावन होगा।

त्याग, वैराग्य में जो खोगा,
वर्षायोग सरस होगा।

मोक्षमार्ग-मय जो होगा,
वर्षायोग सफल होगा।

ललितपुर वर्षायोग 2020

जिनेन्द्र प्रभु का दर्श

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

तालबेहट का ताल बड़ा,
कमलों का वन जहाँ खिला,
गगन चुम्बि है बना किला,
जिन मंदिर प्राचीन कुँआ
जिनेन्द्र प्रभु का दर्श हुआ।

मूल पार्श्व-जिन मंदिर में
मुनि वसते जिन-परिसर में,
जैनों में भक्ति-भाव भरा,
साधु सु-योग में हर्ष हुआ,
जिनेन्द्र प्रभु का दर्श हुआ।

आदिनाथ की प्रतिमा प्यारी,
अति प्राचीन जगत् में न्यारी,
प्रतिहार्य सह-इन्द्र पूजते,
जगत् सुखी हो करें दुआ,
जिनेन्द्र प्रभु का दर्श हुआ।

कोरोना का संकट आया,
नहीं नगर को छू वह पाया,
साधु संघ ने पुण्य बढ़ाया,
प्रभु अतिशय यह यहाँ हुआ,
जिनेन्द्र प्रभु का दर्शन हुआ।

अपने घर आओ

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

ज्ञान-ज्योति अंतस में बस,
जगा अपने घर आओ।

धर्म पथ में पावन होकर,
धर्मी के गुण गाओ।

कभी प्लेग बाढ़ से या,
भूकंप व गैस से भी,
परमाणु का वायरस से उस,
कोरोना संकट से भी।
निर्धन हो या धनिक भी हो,
कर्म-फल चखना होता।
नहीं बाँटने आता कोई,
किये पाप का गम होता।
गम के उस काल में तुम,
समता से काम लेना।
परीक्षा की घड़ियों में,
धर्म न कदा ठुकराओ।
ज्ञान ज्योति अंतस् में बस,
जगा, अपने घर आओ।

शत करीब वर्षों में वह,
महा विकट आपद् आती।
जन हानि व महा दुःख से,
धर्म करो यह याद लाती,

विषय-सुख के काल में तुम,
धर्म नहीं विसरा जाओ
ज्ञान ज्योति अंतस् में बस,
जगा अपने घर आओ।

बाह्य उस खान-पान में,
व्यसन और ताम-झाम में,
नाम, झगड़े, अपव्यय में,
रोग जहर सा है घुलता।
व्यर्थ सैर और बनावट में,
मजा-मौज व भीड़-भाड़ में,
अन्याय अनीति स्वार्थ बाज में,
असाध्य रोग- फल मिलता।
रास्ता बस एक ही है,
स्वस्थ धर्म अपनाओ।
ज्ञान ज्योति अंतस् में बस,
जगा अपने घर आओ।

धर्म पथ में पावन हो,
धर्मी के गुण गाओ।
बस अपने घर आओ॥

तालबेहट

10/04/2020

रहो अपने देश में

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

न जाओ तुम दूर भैया,
विधर्मी पर देश में,
धर्म-भू का कर्ज चुकाओ,
रहो अपने देश में।

प्रकृति की आपद् ही,
अपनों से दूर करती,
अरमानों के महलों को सब,
कब जाने चूर करती।
सारे रिश्ते, नाते भी,
मिटते हैं लेश में,
न जाओ तुम दूर भैया,
विधर्मी पर देश में।

धर्मायतन भी दूर होते,
स्वार्थ भरे चहरे होते,
न हृदय हि तृप्ति पाता,
मन भी खिन्न हो जाता,
रहो बंधु इसलिए तुम,
धर्म के परिवेश में।
न जाओ तुम दूर भैया,
विधर्मी पर देश में,
धर्म-भू का कर्ज चुकाओ,
रहो अपने देश में।

तालबेहट 19/04/2020

मोक्ष मिले अरमान

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

भारत देश महान है,
शाकाहार प्रधान है,
जान जहाँ जहान है,
मानवता पहचान है।

प्राण बचें ही इलाज है,
पुण्य धर्म का काज है,
जीवन का शुभ साज है,
शिव तट हेतु जहाज है।

समकित शुभ श्रद्धान है,
ज्ञान वहाँ सम्मान है,
व्रत, पाप की हान है,
चारित ये शुभ काम है।

सौम्य क्रिया पथ शान है,
मोक्ष मार्ग जो नाम है,
ध्यान जहाँ, सुख खान है,
योग रहे सु-महान है।

जिन में ही आराम है,
कर्म कटें शिवधाम है,
आत्म सुगुण की खान है,
यही सही पहचान है।

निरभिमान गुणवान है,
कर्तव्यों का ध्यान है,
क्षमावान धनवान है,
मोक्ष मिले अरमान है।

तालबेहट 20/04/2020

वर्तमान में प्रचलित महामारी को रोकने में जैन सिद्धांतों की उपयोगिता

डॉ. सनत कुमार जैन

वर्तमान में कोरोना वायरस द्वारा फैली कोविड 19 का जो प्रकोप चल रहा है, उसने जैन सिद्धांतों की महता एवं उपयोगिता को विश्व के सामने सिद्ध कर दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा समय-समय पर जारी निर्देश इसके प्रमाण है। ये निर्देशे जैन सिद्धांतों के पालन करने की सीख दे रहे हैं।

अब हम जैन दर्शन में वर्णित सिद्धातों पर दृष्टिपात करते हैं। इन सिद्धांतों का प्रतिपादन भगवान आदिनाथ से लेकर महीवीर पर्यन्त 24 तीर्थंकरों द्वारा इनके विषय में अपने-अपने काल में प्राणियों के जीवन कल्याण के लिए हितोपदेश रूप दिए गए। जीवन जीने की कला सिखाई एवं स्वस्थ जीवन के लिए सूत्र दिए गए। वर्तमान में हम भगवान महावीर के शासनकाल में रह रहे हैं। उनके द्वारा दिए गए उपदेशों में ''जियो और जीने दो'', अहिंसा, अपरिग्रह, अनर्थदण्ड विरति आदि की वर्तमान युग में अत्यधिक आवश्यकता है। साथ ही, आदिनाथ द्वारा प्रतिपादित अहिंसक खेती (वर्तमान में जैविक खेती के नाम से प्रचार-प्रसार हो रहा है), गौ-पालन आदि की आवश्यकता पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में अधिक है। ये सभी सिद्धांत हमें आत्मनिर्भर बनाने में कारगर तो हैं ही, पर्यावरण के संरक्षण में भी इनकी अति महता है।

सर्वप्रथम जैन धर्म ने ही विश्व को जल छानकर पीना सिखाया एवं जीवाणी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की सीख दी ताकि सम्पूर्ण मानव जाति स्वस्थ एवं सुरक्षित रहकर जीवन यापन कर सके। पानी छानने से हम बहुत सी जलजनित बीमारियों से बचे रह सकते हैं। इस बात को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी स्वीकारा है एवं कई अफ्रीकन देशों में मोटे सूती कपड़े से जल छानने की महता प्रतिपादित की ताकि इन गरीब देशों के लोग बीमारियों से बचें एवं स्वस्थ रहें। इसका इथिओपिया आदि कई देशों को फायदा मिला व इन देशों के लोग जलजनित बीमारियों से मुक्ति पाने में सफल रहे।

इस प्रकार जीवाणी भी सिर्फ एक क्रिया ही नहीं है, इसके अन्दर जलस्रोत के चयन से लेकर पर्यावरण संरक्षण की नीति का सन्देश छिपा है। संक्षेप से कहूँ तो मैं यही कह सकता हूँ कि हमें पीने के जल के लिए उसी स्रोत का चयन करना चाहिए जहाँ सरलता से जीवाणी कर सकें यानी बिना मशीन की सहायता से जल ग्रहण कर सकें। ऐसे जल स्रोत का पानी हमारे स्वास्थ्य के लिए हितकर होगा एवं उस स्रोत से हम उतना ही जल लेंगे जितनी कि हमें वास्तविक आवश्यकता है, व्यर्थ में जल नहीं बहेगा यानी अपव्यय पर अंकुश लगेगा। अपव्यय को अनर्थदण्ड कहा है। हम अनर्थदण्ड एवं हिंसा दोनों से बचेंगे। साथ ही, उनके पालन करने से जल का संवर्धन व पर्यावरण संरक्षण होगा। जीवाणुओं को स्रोत में डालने से जल का शुद्धिकरण निरंतर होता रहेगा।

इस विषय में आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित **''तीर्थोदय काव्य''** में यह बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है:-

किसी पात्र व रस्सी द्वारा, जल निकाल कर छानें वे।
मोटा कपड़ा दुहरा होता, धीरे-धीरे छानें वे॥
बिना छना जल गिरे न नीचे, योग्य पात्र हो ध्यान रहे।
जीवानी को नीर सतह पर, धीरे छोड़ें ज्ञान रहे॥ 322॥

इस प्रकार जैन धर्म में जितने भी सिद्धांत व क्रियायें करने के लिए कही गईं हैं वे सभी मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण को केन्द्रित कर ही कही गई हैं, ताकि हम सभी तरह की बीमारियों व महामारी से मुक्त रहें। स्वस्थ एवं सुरक्षित जीवन जी सकें। कहा ही है- ''Prevention is better than Cure''।

स्वस्थ जीवन के लिए प्रथम आवश्यकता है स्वच्छता। जैन धर्म में पग-पग पर यानी हर कार्य में स्वच्छता एवं विवेक पर जोर दिया गया है, क्योंकि स्वच्छता से ही स्वास्थ्य है। स्वच्छता का पाठ बाह्य व आंतरिक स्वच्छता (यानी बाह्य शुद्धि एवं आंतरिक शुद्धि) के रूप में दैनिक चर्या में शामिल किया गया है।

भोजन बनाने में सोलह प्रकार की शुद्धि बताई गई है। चौके में प्रवेश शारीरिक शुद्धि के बाद ही कहा गया है। जिस प्रकार डॉक्टर ओ.टी. में तभी प्रवेश करता है जब उसने सारे नियमों का पालन कर लिया है। यदि वह इन नियमों का पालन नहीं करेगा या ढिलाई करेगा तो वह मरीज के साथ ही अन्य सभी जनों सहित ही स्वयं के जीवन को खतरे में डाल देगा। अत: चौके की शुद्धता से परिवार के सभी लोग स्वस्थ रहेंगे।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जैन धर्म के गूढ़ सिद्धांतों की अपेक्षा, अब हम आगे इसी प्रकार के छोटे-छोटे व्यावहारिक सिद्धांतों की चर्चा करते हैं जिनका पालन करने से हम महामारी से अपन बचाव कर सकते हैं। हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं प्रशासन द्वारा कुछ उपायों का प्रयोग करने के लिए पब्लिक को कहा जा रहा है।

1. शुद्धि: जैसा ऊपर बताया गया है कि शुद्धि से हमारे स्वास्थ्य का सीधा सम्बन्ध है। इसके अंतर्गत जल शुद्धि, भोजन शुद्धि, वस्त्र शुद्धि, काय(शरीर) शुद्धि आदि अन्य सभी प्रकार की शुद्धियाँ आती हैं। जैसे- जब भी हम बाहर से घर में प्रवेश करें तो प्रवेश करने से पूर्व हाथ-पैरों, चेहरे को अच्छी तरह से जल से एवं साबुन से साफ करें। चप्पल आदि को धोकर बाहर ही छोड़ दें। यदि हम अछूत स्थान से होकर आ रहे हैं तो वस्त्रों को भी धोएं एवं स्नान करें। यह शुद्धि क्षेत्र विशेष पर निर्भर करती है।

2. संसर्ग से दूरी: मंदिर में अथवा गुरुओं के दर्शन करने की विधि में 5 फीट की दूरी के पालन करने का कहा है। इस नियम का अनुसरण करते हुए हमें लोगों से मिलने-जुलने में कोताही बरतना चाहिए। दूर से नमस्कार करना है।

3. देशव्रत या अणुव्रत: इनके पालन करने से हम शुद्ध भोजन करते हैं। भोजन भी समय से मौन पूर्वक करते हैं। बार-बार भोजन नहीं करते हैं। इसके पालन करने से हमारा पाचनतंत्र सुचारु ढंग से कार्य करता है। रसी के नियम का पालन करने यानी सप्ताह में एक दिन एक रस का त्याग, से शरीर के अंदर नमक, मीठा आदि रसों का संतुलन बना रहता है। (न्यूनता-अधिकता नहीं हो पाती)। पाचन शक्ति अच्छी बने रहने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है।

4. प्रासुक जल का उपयोग: मुनिराज आहारचर्या से प्रासुकजल (गुनगुना पानी) का ही प्रयोग करते हैं। इस जल के प्रयोग से शरीर का तापक्रम एक सा बना रहता है। हम गर्म भोजन करते हैं। भोजन भी जठराग्नि के माध्यम से पचता है। अत: शरीर के अंदर की क्रियाएं सुचारु चलती रहें, उसके लिए आवश्यक है कि हम उसी तापक्रम के आसपास जल को भी ग्रहण करें। आज चिकित्सा विज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकारता है। ठंडा पानी

पीने से पाचनक्रिया पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जैसे किसी गर्म धातु पर ठंडा जल डालने से उसकी गुणवत्ता पर बुरा असर पड़ा है या वस्तु में दरारें पड़ जाती हैं।

5 मर्यादा: जैन धर्म में खाने-पीने की प्रत्येक वस्तु में ऋतु के अनुसार उपयोग करने की मर्यादा निर्धारित की गई है, ताकि खाद्य वस्तु की शुद्धता बनी रहे एवं उसकी पौष्टिकता कायम रहे। जैसे- सामान्य छने जल की मर्यादा 48 मिनिट, हल्का गर्म जल की लौंग आदि डालने पर 6 घंटे एवं उबले जल की मर्यादा 24 घंटे कही गई है। इसी प्रकार आटे की 3 दिन, 5 दिन व 7 दिन। इसी प्रकार अन्य खाद्य वस्तुओं के विषय में जानना चाहिए। मर्यादा बीत जाने के बाद इन वस्तुओं में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति हो जाती है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद हो सकती है। यही आधुनिक विज्ञान में स्वीकार करने से शासन द्वारा एक्सपायरी दिनांक लिखना आवश्यक किया गया है, जो कि वर्णित तथ्य की पुष्टि करता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थों की भी पहचान की गई है।

इस प्रकार मर्यादा का पालन करने से एवं भक्ष्य-अभक्ष्य खाद्य पदार्थों का विचार कर भोजन की शुद्धता यानी भोजन में शुद्धता कायम रखी जा सकती है। हिंसक सौंदर्य प्रसाधन को त्याग कर शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। ''**तीर्थोदय काव्य**'' में भी कहा है कि-

इसी तरह वे मर्यादा के, बाहर सब आहार तजें।
जिनमें उपजें जीव असंख्य, त्रस-हिंसा तज पुण्य भजें॥ 321॥
अभक्ष या बाजार बनी हो, भोज्य सेवते नहीं कदा।
रेशम, चमड़ा आदिक हिंसक-सभी वस्तुएँ त्याग सदा॥ 322॥

6. शाकाहार: इससे हमारे शरीर को पोष्टिक भोजन मिलने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है। हमारे शरीर को सभी आवश्यक तत्व, विटामिन्स आदि आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। इसका भी विश्व में काफी प्रचार हो रहा है।

7. अपरिग्रह एवं अनर्थदण्ड: इनसे हमारे मन की उच्छृंखलता पर अंकुश लगता है। हम अनुपयोगी वस्तुओं के संग्रह से बचते हैं। प्राकृतिक सम्पदा के अत्यधिक दोहन या शोषण ना करने से पर्यावरण में संतुलन कायम रहता है। प्रदूषण नहीं फैलता जैसा कि अभी महामारी के दौर में प्रकृति में बदलाव होने से वायु, जल आदि में शुद्धता परिलक्षित हो रही है। प्रकृति को हम नए रूप में देख रहे हैं। चूंकि इस समय मानवजनित प्रदूषण (औद्योगिक प्रदूषण) ना के बराबर रहा। इससे यह सिद्ध होता है कि यदि हम अपनी इच्छाओं पर लगाम लगा लें, कम से कम वस्तुओं का प्रयोग करें, जितना आवश्यक है उतना ही प्रकृति से ग्रहण करें, अपव्यय से बचें, लोभ लालच का त्याग करें तो हम प्रकृति के संसाधनों की रक्षा (संरक्षण) कर सकते हैं। ये भविष्य में हमारे काम आएंगे एवं आने वाली पीढ़ी को गुणवत्तावूर्ण पर्यावरण दे सकते हैं। यदि पर्यावरण शुद्ध रहता है तो हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। महामारी के प्रकोप से हम सुरक्षित रह सकेंगे। इनकी चर्चा तत्वार्थ सूत्र के 7 वें अध्याय के सूत्र क्र. 17-**मूर्च्छा परिग्रहः** ॥ 17 ॥ एवं 21- **दिग्देशा-नर्थदण्ड विरति समायिक प्रोषधोप-वासोपभोग परिभोग परिणामा-तिथिसंविभाग व्रतसंपन्नश्च** ॥ 21 ॥ में की गयी है।

8. अहिंसक खेती व गौ पालन : यह हमारी संस्कृति रही है, परन्तु विज्ञान की अंधी दौड़ ने इसे अनुपयोगी बताकर यांत्रिक खेती एवं रसायनों के उपयोग पर जोर दिया। नतीजा हमारे समाने है। इससे हमारे

स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ा। हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो गई, तरह-तरह की बीमारियों ने जन्म लिया। धान्य, फल, सब्जियों की गुणवत्तओं में ह्रास हुआ। खेती की लागत में वृद्धि होने से किसानों को नुकसान उठाना पड़ रहा है, आत्महत्याओं में वृद्धि हो रही है, जमीन बंजर हो रही है आदि-आदि दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। किसानों का स्वयं का बीज नहीं रहता, बाजार से ही खरीदना पड़ता है। जमीन की गुणवत्ता पर बुरा असर हुआ है। अनाज, सब्जी, फल में पौष्टिक नहीं होने से मानव में रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी हुई है।

यदि हम पारम्परिक खेती को अपनाएं तो ऊपर वर्णित हानियों से निजात पा सकते हैं। साथ ही, पौष्टिक सब्जी-फलों को प्राप्त करते हुए स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। कृषि भूमि की गुणवत्ता, उर्वरकता अच्छी बनी रह सकती है। कृषि लागत कम होने से किसान भी अच्छा जीवन यापन कर सकेंगे। पर्यावरण संतुलन कायम रह सकेगा।

इस विषय पर मैंने बीते वर्षों में सेमिनार में एवं शोध पत्रों में लेख भी लिखे हैं जिसमें सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण लाभों का वर्णन प्रस्तुत किया है। वर्तमान में किसान भी जैविक खेती के रूप में इसे अपना रहे हैं। लोगों का भी रुझान इस ओर तेजी से बढ़ रहा है एवं सरकारें भी इसे प्रोत्साहित कर रहीं है।

9. **भावना योग :** मुनिश्री 108 प्रमाणसागरजी ने इसके बहुत लाभ बताये हैं। अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग भावना योग प्रवर्तित किये हैं। इसके नियमित अभ्यास से लोगों को बीमारियों में लाभ हो रहे हैं। इस महामारी से लड़ने से हमें मानसिक दृढ़ता प्राप्त होगी। हम शारीरिक व मानसिक रूप से दृढ़ होकर महामारी को रोकने में अपने को समर्थ बना सकते हैं।

10. **अहिंसा एवं करुणा :** इनके पालन से हममें परोपकार, दूसरों की सहायता आदि गुणों का विकास होता है। हम सभी के साथ मिलकर वर्तमान की चुनौती का सामना करने में सामूहिक रूप से सक्षम होंगे। इसका महत्त्व तत्त्वार्थ सूत्र के अध्याय 7 के 11 वें सूत्र-**मैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ्यानि च सत्त्व गुणाधिक क्लिश्यमाना-विनेयेषु॥ 11॥** में बताया है। संसार के प्राणी मात्र में मित्रता की भावना करनी चाहिए, क्योंकि मैत्री-मित्रता की परिभाषा अनुसार, एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों से हमारा उपकार होता है। आचार्य अमितगति सूरी महाराजजी ने ''श्री भावना द्वात्रिंशतिका'' में आरम्भ में ही ''**सत्त्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा-परत्त्वम्। माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव॥ 1॥**'' कहा है। ऐसा कहकर आचार्यश्री ने मैत्री आदि भावों पर पर्यावरण मैत्री की ही बात की है। 108 मुनिश्री अमितसागर लिखित हिंदी टीका अनुत्तर जिज्ञासा में विस्तार से पढ़ा जा सकता है।

उपर्युक्त नियमों का पालन यदि हम ईमानदारी से करते हैं तो हम इस महामारी की रोकथाम कर अपने आपको, परिवार को, समाज को एवं अन्य जनों को भी सुरक्षित रखने में महती भूमिका का निर्वाह सकर सकते हैं।

अंत में मेरा अभिमत है कि हमें उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को त्यागते हुए संरक्षणवाद की ओर आना होगा क्योंकि ये सिद्धांत हमारे लिए सुरक्षा कवच हैं।

पर्यावरण तकनीकी विशेषज्ञ, इन्दौर
मो. 9302105645

आर्जव गुरु यश गाथा

-संकेत बजाज (जैन)

हे मुनिवर तेरी यश कीर्ति गाथा गाता चलूँ गाता चलूँ
मन में बिना किसी विकार के आगे बढ़ता चलूँ बढ़ता चलूँ
मोह माया त्याग कर निज को नि:स्वार्थ बना लिया।
कर्मों की आंधियों को अपने तपोबल से हरा दिया॥
निज को निज में रम कर निज का कल्याण किया
इस संसार की नश्वरता से तत्क्षण मुख को मोड़ लिया॥ 1 ॥
हे मुनिवर तेरी यश कीर्ति गाथा गाता चलूँ गाता चलूँ
मन में बिना किसी विकार के आगे बढ़ता चलूँ बढ़ता चलूँ
गुरु विद्या के सागर में ज्ञान का रस आपने चखा।
दिगम्बर वेष धार कर निज को धर्म ध्यान में रखा॥
मोक्षमार्ग की कठिन सीढ़ी को आपने चुना।
संसार से मुक्ति के लिए सम्यक्त्व को गुना॥ 2 ॥
हे मुनिवर तेरी यश कीर्ति गाथा गाता चलूँ गाता चलूँ
मन में बिना किसी विकार के आगे बढ़ता चलूँ बढ़ता चलूँ
बारह भावनाओं को भक्ति भाव से चिंतन किया।
इस भक्ति की शक्ति से ब्रह्मचर्य को धारण किया॥
जिन मार्ग पर आगे बढ़ने का संकल्प लिया।
निज के निज गुण प्रगटाने को तत्त्व ध्यान किया॥ 3 ॥
हे मुनिवर तेरी यश कीर्ति गाथा गाता चलूँ गाता चलूँ
मन में बिना किसी विकार के आगे बढ़ता चलूँ बढ़ता चलूँ
हुई मुनि दीक्षा सोनागिरी में आप चंदा से चमके।
गिरी चंद्रप्रभु की छत्रछाया में समीचीन गुण महके॥
मुनि दीक्षा देख देवों ने उत्सव मनाया
सोनागिरि तीर्थ का गौरव बढ़ाया॥ 4 ॥
हे मुनिवर तेरी यश कीर्ति गाथा गाता चलूँ गाता चलूँ
मन में बिना किसी विकार के आगे बढ़ता चलूँ बढ़ता चलूँ

तालबेहट
29/05/2020

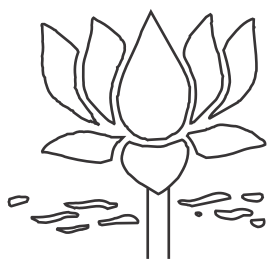

आर्जव गुरु वंदना

-अनिल जैन

गुरु वंदना करने आया, शुद्ध भावना से।
मेरा जीवन सुखी हुआ है, गुरु वंदना से॥

धन्य धन्य है धन्य भाग्य है, धन्य घड़ी आयी।
रत्नत्रय के धारी गुरुवर, जिन मूरत पायी।
धन्य हो गया जीवन मेरा, आज वंदना से,
मेरा जीवन सुखी हुआ है, गुरु वंदना से॥

कभी न देखा, कभी सुना न, कहीं नहीं देखा।
ऐसे गुरुवर मुझे मिले हैं, किस्मत की रेखा॥
मन विभोर हो नाच रहा है, आज वंदना से,
मेरा जीवन सुखी हुआ है, गुरु वंदना से॥

स्वर्ग न देखा, मोक्ष न देखा, बस तुमको देखा।
स्वर्ग मोक्ष मिल गया धरा पर, जब तुमको देखा॥
है 'अनिल' आनंद मिल रहा, परे कल्पना से,
मेरा जीवन सुखी हुआ है, गुरु वंदना से॥

लॉकडाउन की आयी बेला, ऐसा भाग्य जगा।
नगर में 'आर्जव संघ' पधारा, सबका पुण्य बढ़ा॥
आर्जवसागर ज्ञान की गंगा, बहा रहे मुख से,
मेरा जीवन सुखी हुआ है, गुरु वंदना से॥

कोरोना की महामारी ने, देश को ध्वस्त किया।
गुरुवर ने अपने तप बल से, नगर अछूता किया।
दया धर्म की प्रबल भावना, करें साधना से
मेरा जीवन सुखी हुआ है, गुरु वंदना से॥
गुरु वंदना करने आया, शुद्ध भावना से॥

तालबेहट

आर्जव गुरु कृपा

-अनिल जैन

''गुरुवर तुमरे कंठ में, सरस्वती का वास।
गुरुवर से तुम दूर भी, रहते गुरु के पास॥''

''भक्ति करते ईश की, आत्म तत्त्व में लीन।
भक्ति समर्पित कर दी, प्रभु चरणों में दीन॥''

''जो-जो आते भक्तगण, रखते उनका ध्यान।
श्रावक बन पूजा करो, देते यह वरदान॥''

''दूर दूर से भक्त भी, आते बहुत अपार।
मनवांछित फल पाय के, हर्षित मन उद्‌गार॥''

''शास्त्र अनेकों लिख दिए, भाव भरे घनघोर।
जो पढ़के श्रद्धा करे, बढ़े मोक्ष की ओर॥''

''सप्तऋषि हैं संघ में, अष्टम वसुधा पाये।
इस भव में यह लक्ष्य है, लक्ष्य पूर्ण हो जाये॥''

''विद्यागुरु दीक्षा दिए, इस युग के भगवान।
'आर्जवसागर' नाम है, ऋजुता जो पहचान॥''

''अल्प बुद्धि मुझमें रही, और रहा ज्ञान।
यह दोहा लिखते 'अनिल', गुरु करो कल्याण॥''

तालबेहट

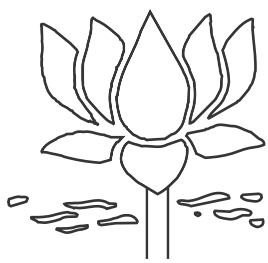

गुरु का पद विहार बना श्रद्धालुओं को उपहार

अध्यात्म योगी प.पू.आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ का विहार अशोका गार्डन, भोपाल चातुर्मास उपरांत तारीख 28/11/2019 को शंकराचार्य नगर होते हुये ऐशबाग की ओर हुआ। गुरुवर ससंघ की ऐशबाग में भव्य मंगल आगवानी की गई। पश्चात् श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, चन्दन नगर कमेटी ने गुरुदेव के श्रीकमलों में श्रीफल भेंट कर शीतकाल प्रवास हेतु निवेदन किया। तारीख 2/12/19 को गुरुवर ससंघ के चरण चंदन नगर की ओर बढ़े। बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक बैण्ड-बाजों के साथ ससंघ की मंगलमय आगवानी हुई। 8-10 दिन प्रवास के दौरान आचार्यश्री ससंघ द्वारा मंगल प्रवचन, दोपहर में स्वाध्याय और सायं को शंका समाधान एवं पाठशाला का लाभ प्राप्त हुआ। पश्चात् 15 दिसंबर को नेमीनगर होते हुये गुरुवर का मंगल विहार कुराना जी की ओर हुआ। कुरानाजी की अत्यंत मनोहारी भ.आदिनाथ की प्रतिमा का दर्शन कर आहारचर्या उपरांत गुरुवर ससंघ का मंगल विहार बैरसिया की ओर हुआ। कुराना से निपानिया जाट, हर्रखेड़ा होते हुए बैरसिया पहुँचे। कुछ दिन के प्रवास में लोगों ने प्रवचन, स्वाध्याय, पाठशाला आदि का लाभ लिया एवं शीतकालीन प्रवास हेतु निवेदन किया। यहाँ पर आसपास के नगरों से कमेटी जनों में आकर गुरुदेव को श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। तत्पश्चात् शमशाबाद, लटेरी, अनंतपुरा में दो-दो दिन का समय देने हुये गुरुवर ससंघ की मंगल आगवानी आरोन नगर के श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर में हुई।

7 वां आचार्य पदारोहण दिवस मनाया-

तारीख 31/01/20 (माघ शुक्ला षष्ठी) को गुरुवर श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का 7 वां आचार्य पदारोहण दिवस मनाया गया। जिसमें सर्वप्रथम गुरुवर का पाद्-प्रच्छालन किया गया। पश्चात् बाहर से पधारे हुये अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन किया गया। पश्चात् महिला मण्डल द्वारा गुरुवर की अष्ट द्रव्य से पूजन की गई। पाठशाला की कन्याओं द्वारा मंगलाचरण किया गया। तदोपरांत गुरुदेव की मंगलमयी देशना सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सांय को गुरुभक्ति पश्चात् गुरुवर की बड़े ही धूमधाम से मंगलमय आरती की गई। इस प्रकार आरोन नगरवासियों को गुरुदेव आचार्य पदारोहण दिवस मनाने का अवसर प्राप्त हुआ।

1 फरवरी को गुरुवर का विहार बजरंगगढ़ होते हुये गुना की ओर हुआ। गुना नगर के श्री पार्श्वनाथ दि. जैन बड़ा मंदिर, महावीर भवन वालों को गुरुवर ससंघ का सान्निध्य प्राप्त हुआ। 10-12 दिन प्रवास के दौरान आचार्यश्री ससंघ द्वारा मंगल प्रवचन, दोपहर में स्वाध्याय एवं सांय को शंका समाधान, प्रश्नमंच का मौका मिला। पश्चात् तारीख 11, 12, 13 फरवरी को आर्यिकाश्री 105 प्रतिभामति माताजी के मुखारविंद से त्रिदिवसीय लोककल्याण महामण्डल (षोडशकारण विधान) का आयोजन किया गया जिसमें अनेक, श्रावक-श्राविकाओं एवं ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। पश्चात् तारीख 16/2/20 को गुरुवर का मंगल विहार शिवपुरी की ओर हुआ। शिवपुरी में 4-5 दिन प्रवास के दौरान आचार्य ससंघ द्वारा मंगल प्रवचन आदि का लाभ श्रावकों को

प्राप्त हुआ। शिवपुरी में आचार्य ससंघ द्वारा पुरातत्व संग्रहालय का निरीक्षण भी हुआ।

दीक्षास्थली सोनागिरि की ओर बढ़ते हुये गुरुचरण-

तारीख 24/02/20 को गुरुवर ससंघ का मंगल विहार शिवपुरी से सोनागिरि की ओर हुआ। सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में सन्1988 में महावीर जयंती के दिन आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से गुरुवर को मुनिदीक्षा प्रदान हुई थी। सिमनौली, अमोला, सुनवाहा होते हुये करैरा नगर में आचार्य ससंघ की मंगलमय आगवानी हुई। प्रातः गुरुदेव के मांगलिक प्रवचन के पूर्व बालिका मण्डल की बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। पश्चात् गुरुवर ससंघ का कुछ दिन का सान्निध्य करैरा वासियों को प्राप्त हो इस मंगलमयी भावना के साथ श्रीफल भेंट कर कमेटी जनों ने गुरुवर से निवेदन किया। पश्चात् सायंकाल गुरुभक्ति उपरांत, बहिनों ने जैनागम संस्कार के प्रतिदिन स्वाध्याय करने का नियम लिया। बालिका मण्डल की तारीख 27/02/20 को करैरा से विहार कर समोहा, गोंधारी होते हुये 29 फरवरी को सायं 5 बजे गुरुवर ससंसघ की भव्य मंगलमयी आगवानी सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में हुई। पश्चात अतिशयकारी भगवान चन्द्रप्रभु की प्रतिमा के दर्शनोपरांत गुरुवर ने बताया कि सन् 1988 में दीक्षोपरांत नवदीक्षित मुनिराजों का प्रथम प्रतिक्रमण वहीं ऊपर ही हुआ था। पश्चात् अष्टाह्निका पर्व में गुरुवर ससंघ का मंगल सान्निध्य तेरापंथी धर्मशाला वालों को प्राप्त हुआ। अष्टाह्निका पर्व के दिनों में प्रतिदिन ऊपर पर्वत पर चन्द्रप्रभु भगवान के यहाँ गुरुवर के मुखारविन्द से शान्तिधारा संपन्न कराई गई। तारीख 03/03/2020 को आचार्यश्री के आशीर्वाद से मंदिर क्रमांक 1 में शांतिनाथ विधान उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

सोनागिरि वार्षिक मेला में प्राप्त हुआ गुरुवर का सान्निध्य-

सोनागिरि वार्षिक मेला 2020 के अवसर पर तारीख 10/03/20; होली के दिन गुरुवर श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में श्री जी की शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें अनेक जगह से आये हुए लोग शामिल थे। श्रीजी की शोभायात्रा तेरहपंथी धर्मशाला से प्रारंभ होकर विशाल धर्मशाला पहुँची। जगह-जगह श्रीजी की आरती एवं गुरुदेव का पाद्-प्रच्छालन किया गया। पश्चात् गुरुवर ससंघ मंचासीन हुआ। तदोपरांत मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत की गई। विशाल धर्मशाला (जो कि गुरुवर की सोनागिरि का दीक्षा स्थल है) में आचार्यश्री की मंगलमय देशना सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। पश्चात् श्री जी के अभिषेक उपरांत गुरुदेव के मुखारविंद से शांतिधारा संपन्न की गई। श्री जी की आरती के उपरांत रथयात्रा तेरहपंथी धर्मशाला पहुँची इस प्रकार सोनागिरि मेले का आयोजन किया गया।

सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में गुरु करकमलों से प्रदान की गई मुनिदीक्षा-

तारीख11/03/2020 को प्रातःकाल ऐलक श्री 105 वर्धमानसागर जी का केशलोंच हुआ। आहारचर्या उपरांत दोप. 2 बजे आचार्य ससंघ देवदर्शन पश्चात् मंचासीन हुये। मंच पर संघ सहित गुरुदेव ऐसे शोभायमान हो रहे थे मानों समवशरण में शिष्यों के मध्य साक्षात् तीर्थंकर ही विराजमान हों। मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत कीगई; जिसमें दिल्ली, सूरत, महाराष्ट्र, भोपाल, दमोह आदि अनेक प्रांतों से आये हुये अतिथियों द्वारा

सर्वप्रथम चित्र अनावरण, दीप प्रज्जवलन एवं भक्ति भाव पूर्वक संगीतमय गुरुदेव की पूजन की गई। गुरुवर के पाद-प्रच्छालन का सौभाग्य तेरहपंथी धर्मसाला के कमेटी जनों को प्राप्त हुआ एवं गुरु करकमलों में शास्त्र-दान करने का अवसर श्रीमान् राजेश कुमार, रोहित .... 'आर्जवछाया' सपरिवार दमोह वालों को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् ऐलकश्री ने मुनिदीक्षा हेतु निवेदन करते हुये गुरुवर से कहा कि- हे भगवन्! हे परमोपकारी गुरुदेव! इस पतित जीवन को पावन बनाने वाले आप ही हैं। मेरी यही भावना है कि मुझे वीतराग चारित्र की प्राप्ति हो। हे गुरुवर! मुझे मुनिदीक्षा देने की कृपा करें।

तत्पश्चात जैसे ही मुनिदीक्षा संस्कार हेतु आचार्यश्री खड़े हुये वैसे ही संपूर्ण प्रांगण जय-जयकार ध्वनि से गूँज उठा। आचार्यश्री ने सर्वप्रथम ऐलकश्री की केशलोंच आदि क्रिया संपन्न की। पश्चात् सिर पर श्रीकार बनाकर, हाथों पर अंकों का लेखन किया। इसके बाद गुरुवर ने 28 मुलगुणों एवं 5 महाव्रतों का उपदेश दिया। पश्चात् दीक्षा की अन्य संस्कारों की क्रियायें संपन्न कर ऐलकश्री का नामकरण किया। और ऐलकश्री वर्धनसागर जी से मुनिश्री 108 विभोरसागर जी बना दिया। नवदीक्षित मुनिराज का नाम सुनते ही पाण्डाल में जय-जयकार लगाकर जनता अत्यंत हर्षित हो उठी। पश्चात् नवदीक्षित मुनि को पिच्छी-कमण्डलु प्रदान किये गये। इस प्रकार दीक्षा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

धन्य हैं मुनिश्री विभोरसागर जी; जिन्हें गुरुवर की दीक्षास्थली पर ही मुनि दीक्षा प्राप्त हुई। और धन्य हैं ऐसे आचार्य गुरुवर जिन्होंने मुनिश्री के भगवान बनने के मार्ग को प्रशस्त किया।

14/03/20 को आचार्यश्री ससंघ का सिद्धक्षेत्र सोनागिरि से दतिया की ओर विहार हुआ। मंगलप्रवेश आहारचर्या सम्पन्न हुई तथा मध्याह्न में दतिया में ही स्व. जगदीश प्रसाद सोनी पुस्तकालय का निरीक्षण करते हुये झाँसी नगर में दूसरे दिन भव्य मंगल प्रवेश हुआ। करगुवाँ जी अ.क्षे. में आहारचर्या के पश्चात् समाजजनों ने आदिनाथ जयंति के शुभ दिन पर गुरुवर का करगुंवा जी में भव्य मंगल सान्निध्य प्राप्त हो, ऐसा श्रीफल भेंट कर नम्र निवेदन किया। गुरुवर के तीन चार दिनों के प्रवास पर आदिनाथ जयन्ती का कार्यक्रम भव्य रथोत्सव एवं मंगल प्रवचन सम्पन्न हुए फिर आगवानी में आ.श्री अभिनंदनसागर जी के शिष्य मुनिश्री 108 अजितसागरजी एवं व्रती गण आये। इसके बाद झाँसी नगर में गाजों बाजों के साथ भव्य मंगल आगवानी हुई। प्रवचन उपरांत आहारचर्या सम्पन्न हुई व दोपहर में आचार्य संघ की झाँसी स्थित म्यूजियम राजकीय संग्रहालय झाँसी का निरीक्षण किया। उपरांत झाँसी से बबीना की ओर विहार हुआ। बबीना में मंगल आगवानी के उपरांत श्रद्धालुओं के द्वारा आचार्यश्री से कुछ दिन प्रवास हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। करीब 3-4 दिन प्रवासोपरांत गुरुवर का मंगल विहार पावा जी सिद्धक्षेत्र के लिए हुआ। पावाजी में ललितपुर (बाहुबली नगर) नगर के लोगों ने आकर आचार्यश्री से निवेदन किया हे गुरुवर! हम सभी लोगों को भी आपका मंगल सान्निध्य प्राप्त हो। पावाजी में गुरुवर की आहारचर्या संपन्न हुई तत्पश्चात् तालबेहट की ओर गुरुवर ससंघ का मंगल विहार हुआ। 24 मार्च 2020 को गुरुवर ससंघ की मंगल आगवानी तालबेहट नगर में हुई। तालबेहट नगरवासियों को लॉकडाउन

में करीब 2 माह का गुरुवर के प्रवास का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी बीच महावीर जयंती के पावन अवसर पर एवं आचार्यश्री आर्जवसागरजी के मुनिदीक्षा के पावन दिवस पर भक्तों ने बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक गुरुवर की पूजन की। तालबेहट में अपने ग्रन्थ स्वाध्याय के अलावा गुरुवर ने अनेक आध्यात्मिक कविताओं की रचना की। प्रतिदिन सायंकाल गुरुभक्ति उपरांत सभी श्रावकों को गुरुवर के मुखारविंद से कविता सुनने का सैभाग्य भी प्राप्त हुआ। यहाँ पर गुरुवर ने एक अद्वितिय कृति-'सदाचार सूक्ति काव्य' की रचना की जिसमें करीब 570 पद्य हैं। कोरोना महामारी के कारण इस लॉकडाउन के बीच यहीं पर अक्षय तृतीया महापर्व व श्रुतपंचमी पर्व भी मनाया गया। आचार्यश्री द्वारा रचित 'श्रुत में रम' कविता भी सुनने का अवसर भी लोगों को प्राप्त हुआ। श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ को शास्त्रदान करने का अवसर भी तालबेहट वासियों को प्राप्त हुआ। दो से ढाई माह प्रवास के उपरांत गुरुवर का मंगल विहार जखौरा की ओर हुआ। जखौरा नगर में गुरुवर के मांगलिक प्रवचन हुये। इसी बीच तालबेहट आदि के समाज ने गुरुवर के समक्ष श्रीफल भेंट कर अपनी भावना प्रकट कि; कि हे गुरुवर! हम नगर वासियों को आपकी वैय्यावृत्ति का और भी सौभाग्य प्राप्त हो अतः आपका वर्ष 2020 का चातुर्मास हमारे नगर में हो। जखौरा में आहारचर्या उपरांत दोपहर में गुरुवर का मंगल विहार अतिशय क्षेत्र सेरोनजी की ओर हुआ। सेरोनजी में भ.शांतिनाथ की अति मनहारी अतिशयकारी प्रतिमा के दर्शन किये। प्राणपुरा दि. जैन समाज द्वारा आचार्यश्री के समक्ष श्रीफल भेंट कर प्राणपुरा हेतु निवेदन किया। करीब 4 दिन सेरोन जी में प्रवास के उपरांत ससंघ का मंगल विहार राजघाट होते हुये प्राणपुरा की ओर हुआ। राजघाट स्थित भ.मुनिसुव्रतनाथ जिनालय के दर्शन भी किये। पश्चात् गुरुवर के प्रवचन के पूर्व मंगलाचरण, चित्र अनावरण, दीप प्रज्जवलन एवं गुरुवर की पूजन संपन्न की गई। प्राणपुरा कमेटी द्वारा आचार्यश्री से चातुर्मास हेतु निवेदन किया गया। 2-3 दिन प्रवास के उपरांत गुरुवर का विहार जाखलौन की ओर हुआ। जाखलौन में गुना से पधारी पंचायत कमेटी ने गुरुवर से चातुर्मास हेतु निवेदन किया।

आहारचर्या उपरांत गुरुवर का विहार देवगढ़ की ओर हुआ। अ.क्षेत्र देवगढ़ में आचार्यश्री ससंघ की मंगल आगवानी की गई। पश्चात् आचार्यश्री के मुखारबिन्द से भ.शांतिनाथ की शान्तिधारा संपन्न की गई। आहारचर्या उपरांत ललितपुर समाज ने गुरुवर से चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। 3 दिन देवगढ़ में प्रवास के उपरांत ससंघ का मंगल विहार जाखलौन होते हुए ललितपुर नगर की ओर हुआ। ललितपुर में आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के शिष्य मुनिश्री विनिश्चलसागर जी ससंघ द्वारा आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की मंगल आगवानी नई बस्ती स्थित पार्श्वनाथ जिनालय में हुई। पश्चात् दि. जैन पंचायत ललितपुर एवं अ.क्षे. क्षेत्रपाल जी मंदिर कमेटी ने आचार्यश्री से चातुर्मास हेतु निवेदन किया। 26/06/2020 को आचार्यश्री ससंघ की मंगल आगवानी सकल दि. जैन समाज दि. जैन पंचायत व कमेटी तथा आर्यिकाश्री 105 प्रतिभामति माताजी ससंघ द्वारा क्षेत्रपाल जी में की गई।

गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी के 32 वें चातुर्मास की कलश स्थापना संपन्न
अ.क्षे. क्षेत्रपालजी ललितपुर नगरवासियों को मिला 2020 के चातुर्मास का सौभाग्य।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र क्षेत्रपाल जी, ललितपुर (उ.प्र.) में दिनांक 5 जुलाई 2020, रविवार को प्रात:काल की बेला में गुरु पूर्णिमा के पावन सुअवसर पर आचार्य गुरुवर का पाद-प्रक्षालन श्री विनोदकुमार बाकलीवाल, अजमेर वालों की ओर से किया गया था। श्री चंद्र प्रकाश लोहिया परिवार ने द्वितीय कलश से पाद प्रक्षालन किया गया। पश्चात् गुरुवर की पूजन सम्पन्न की गई। शास्त्र भेंट करने का अवसर कु.प्राची प्रवीणकुमार जैन दमोह वालों को प्राप्त हुआ। तदोपरांत गुरुवर के प्रवचन का धर्मलाभ प्राप्त हुआ।

दोपहर 2:30 बजे से आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के चातुर्मास के लिये मंगल कलश स्थापना का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, जिसमें कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण पूर्वक की गई। पश्चात् गुरुवर ससंघ मंचासीन हुए। गुरुवर के पाद-प्रक्षालन करने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्री आनंदकुमार जैन, अमित गारमेंट्स वालों को प्राप्त हुआ। बाहर से पधारे हुये अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन किया गया, इसके उपरांत गुरुवर को शास्त्र भेंट किये गये। शास्त्र भेंट करने का अवसर सागर, दमोह से पधारे भक्तगणों एवं ललितपुर नगर के अन्य मंदिरों से पधारे श्रावकों को प्राप्त हुआ।

ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम को प्रारंभ किया गया। ध्वजारोहण करने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्री सुनीलकुमार मलैया रंगवालों एवं श्री अनिलकुमार अंचल को प्राप्त हुआ। पश्चात् कलश स्थापना की बोलियाँ प्रारंभ हुईं जिसमें प्रथम कलश लेने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमती ज्ञानबाई मनोजकुमार नवीनकुमार जड़ीबूटी परिवार वालों को, द्वितीय कलश का सौभाग्य श्रेष्ठी श्री शीलचंद जिनेन्द्रकुमार बछरावनी वालों को एवं तृतीय कलश लेने का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमान् राजेन्द्रकुमार-कल्पना जैन अंकितकुमार घनवारा वालों को प्राप्त हुआ। मुख्य जिनवाणी गुरुवर के कर कमलों में भेंट करने का अवसर ब्र. सुंदरलाल अनौरा ललितपुर को मिला।

तत्पश्चात् प्रवचन के पूर्व दमोह की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। पश्चात् गुरुवर के मांगलिक प्रवचन संपन्न हुए। प्रवचन में गुरुवर ने कहा कि-चातुर्मास धर्म कमाने का अवसर है, जितना हो सके हमें धर्म लाभ लेना चाहिए। यह साधु संतों का समागम, चातुर्मास बार-बार प्राप्त नहीं होता। चातुर्मास ऐसा अनमोल अवसर है, जिसे पाने के लिये बहुत पुण्य का संचय करना पड़ता है। चातुर्मास को बोलियों के माध्यम से नहीं, धर्म प्रभावना के माध्यम से आँका जाता है।' आचार्यश्री ने बताया कि इसके पूर्व भी आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के साथ इस क्षेत्र पर आने का मोका मिला था।

कलश स्थापना के इस बहुप्रतीक्षित दृश्य को देखने हेतु भोपाल, राहतगढ़, सागर, दमोह, पथरिया एवं ललितपुर नगर के अन्य स्थानों से भी आये धर्मावलंबी साक्षी बने। सभी कलश आचार्यश्री के मुखारविंद से मंत्रों के उच्चारण से भ. अभिनंदननाथ जिनालय में स्थापित किए गये। इस प्रकार मंगल कलश स्थापना 2020 का कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ।

गुरुवर ने बाहुबली नगर को दी सौगात। बाहुबलीनगर के इतिहास में पहली बार आर्यिका द्वय का हुआ चातुर्मास। धूमधाम से हुई चातुर्मास मंगल कलश की स्थापना।

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन समिति, बाहुबली नगर, ललितपुर की ओर से बाहुबली नगर में प्रथम बार, 12 जुलाई 2020 दिन रविवार को आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज की आज्ञानुवर्ती शिष्या आर्यिकाश्री 105 प्रतिभामतिमाताजी एवं आर्यिकाश्री 105 सुयोगमति माताजी का पावन वर्षायोग मंगल कलश स्थापना का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

बाहुबली नगर समाज ने आर्यिकाश्री प्रतिभामति माताजी ससंघ से निवेदन करते हुये कहा कि यह हम बाहुबलीनगर वासियों का परम सौभाग्य है, जो कि आचार्य गुरुवर ने हम पर भी कृपा करके आपके चातुर्मास का परम सौभाग्य हम सभी को प्राप्त कराया है। यह अद्वितीय चातुर्मास होगा क्योंकि बाहुबली नगर में यह प्रथम बार चातुर्मास का अवसर है। प्रात: 8:00 बजे कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सर्वप्रथम आचार्यश्री के चित्र अनावरण बाहुबली नगर महिला मण्डल द्वारा संपन्न किया गया। तत्पश्चात् आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज एवं आचार्यगुरुवरश्री आर्जवसागर जी महाराज की संगीतमय पूजन बड़े ही भक्तिभाव से संपन्न कराई गई। पाठशाला की बहनों द्वारा मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम को गति प्रदान की पश्चात् आर्यिकाद्वय को शास्त्रदान किया गया। शास्त्रदान करने का सौभाग्य साढूंमल परिवार, दमोह की बहिनों एवं अन्य लोगों को भी प्राप्त हुआ।

पाठशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा 'म्हारे आंगन आज आयी देखो मंगल घड़ी' गीत पर प्रस्तुति दी गई। पश्चात् आर्यिकाश्री 105 सुयोगमति जी ने प्रवचन में कहा कि 'चातुर्मास धन कमाने का नहीं धर्म कमाने का अवसर है', यह लोगों को नियम संयम के साथ-साथ प्रकृति के साथ ढलने का संदेश देता है। प्रकृति लोगों को 'जियो और जीने दो' का संदेश देती है।

प्रवचन उपरांत कलश स्थापना की बोलियों की श्रृंखला प्रारंभ की गई। जिसमें प्रथम 'सम्यग्दर्शन' कलश लेने का सौभाग्य श्रीमान अभयकुमार राजेश जैन, चक्रेश जैन साढूंमल परिवार, द्वितीय कलश 'सम्यग्ज्ञान' कलश लेने का सौभाग्य श्रीमान् कल्याण चन्द्र जैन रूपेश, सचिन जैन खिरिया परिवार एवं तृतीय 'सम्यक्चारित्र' कलश लेने का सौभाग्य श्रीमान् कैलाशचंद्र, अभिषेक कुमार, अंकित जैन को प्राप्त हुआ। उनके अलावा और कलशों की भी बोलियाँ संपन्न हुईं। उपरांत आर्यिकाश्री 105 प्रतिभामति माताजी की मंगल देशना सुनने का सौभाग्य धर्मसभा को प्राप्त हुआ, जिसमें आर्यिकाश्री ने वर्षायोग की महिमा बताई एवं गुरु गुणगान को भी व्यक्त किया।

कार्यक्रम में बाहुबली नगर जैन समाज ने सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए अपनी उपस्थिति दर्ज की एवं क्षेत्रपाल मंदिर, अटा मंदिर, नई बस्ती आदि सभी जगह से आये लोगों का चातुर्मास कमेटी द्वारा सम्मान किया गया। इस प्रकार चातुर्मास कलश स्थापना 2020 का कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ।

सम्यग्ज्ञान-भूषण तथा सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला ....से भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता प्राप्त है ☐ नहीं है ☐ सम्यग्ज्ञान-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ तथा सिद्धांत-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ प्रस्तुत है। मेरा पता :- ....जिला .... प्रदेश .... पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....फोन नम्बर/ मोबाईल ....ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण हेतु पंजीकृत किया जाता है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....निवासी.. से **भाव विज्ञान पत्रिका** शिरोमणी संरक्षक सदस्य रुपये 50,000/- से अधिक ☐ पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक सदस्य रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन (स्थायी) सदस्यता रुपये 1,500/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पता :- ....

जिला .... प्रदेश ....पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर/ मोबाईल .... ई-मेल .... है।

दिनांक हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोटः- ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर व रसीद प्राप्त कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : प्रधान सम्पादक-डॉ. अजित कुमार जैन - 7222963457, प्रबंध सम्पादक-डॉ. सुधीर जैन - 9425011357

भाव विज्ञान परिवार

❄❄❄❄❄ शिरोमणी संरक्षक ❄❄❄❄❄

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड) ● श्रीमती जैन नीतिका इंजीनियर हर्ष कोछल्ल, हैदराबाद ● डॉ. जैन संकेत शैलेष मेहता, सूरत ● श्री जैन श्रेणिक श्रेयस बीएल पचन्ना बैंग्लोर ● श्री प्रवीण जैन महावीर रोडलाइन्स, दमोह ● श्रीमती रजनी इंजीनियर महेन्द्र जैन ● श्रीमती अनिता डॉ. (प्रो.)सुधीर जैन ● श्रीमती नीलम राजेन्द्र जैन (एक्साइज़), भोपाल ● श्री जैन अतुल, विपुल, कल्पेश रमेशचंद मेहता, अहमदाबाद ● श्री जैन चंदूलाल राजकुमार काला, कोपरगांव ● श्री जैन संजय मित्तल, रामगंज मण्डी (कोटा) ● श्रीमती जैन विद्यादेवी (वैशाली बेन) अश्विन परिख मनन-सलोनी, सूरत।

❄❄❄❄ परम संरक्षक ❄❄❄❄

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी, ● श्री प्रेमचंद जैन कुबेर, भोपाल ● **कटनी:** श्री पवन कुमार पंकज कुमार जैन।

❄❄❄ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ❄❄❄

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी** : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

❄❄ पुण्यार्जक संरक्षक ❄❄

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली।

❄ सम्मानीय संरक्षक ❄

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, गोवा ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, डॉ. जयदीप जैन मोनू,भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर** : श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन ● **सूरत** : श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेशभाई शाह। ● **पथरिया (दमोह)** : श्रीमती जैन उषा पदम मलैया ● **गुड़गांव** : श्री हिमांशु कैलाशचंद जैन।

❄ संरक्षक ❄

● **रीवा:** श्री जैन विजय अजमेरा, डॉ. अश्विनी जैन ● **छतरपुर:** श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● **दिल्ली** : श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● **हस्तिनापुर (मेरठ):** श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर ● **गुड़गांव:** श्री संजय जैन ● **गाजियाबाद** : श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन ● **कलकत्ता:** श्री जैन कल्याणमल झांझरी ● **भोपाल:** श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, ● **कोटा:** श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंजमण्डी ● **गुवाहाटी:** श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी ● **पांडीचेरी** : श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया ● **सूरत** : श्रीमति विमला मनोहर जैन, श्री निर्मल जैन ● **जयपुर** : श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर:** श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● **इंदौर** : श्री सचिन जैन, स्मृति नगर ● **पथरिया (दमोह)** : श्री मुकेशकुमार जैन (संजय साईकिल)।

❄ विशेष सदस्य ❄

● **दमोह** : श्री मनोज जैन दाल मिल ● **अजमेर** : श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● **सूरत** : श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी ● **भोपाल:** श्री राजकुमार जैन, बिजली नगर ● **कटनी** : श्री शुभमकुमार सुभाषचंद जैन, ● **पन्ना** : श्री महेन्द्र जैन, पवई।

❄ नवागत सदस्य ❄

● **गुना:** श्री राजेश जैन, श्री मनोज जैन, श्रीमती सुषमा अनिल जैन, श्रीमती बबीता जैन, श्रीमती पद्मलता जैन, इंजी. पी.सी. जैन, श्री सुगनचंद जैन, श्रीमती ज्योति दीपक जैन, श्री जैन धर्मेन्द्र बांझल ● **ग्वालियर:** श्री कुशलचंद जैन ● **सोनागिर (दतिया):** श्री विनोद प्रकाश ब्र. मंजुलता जैन ● **तालबेहट (ललितपुर):** श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, डॉ. महेन्द्रकुमार जैन, श्री वैभव अनिलकुमार जैन, श्री सुमतप्रकाश सुमन जैन।

प.पू. आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज की आज्ञानुवर्ती शिष्या

आर्यिकाश्री 105 प्रतिभामति माताजी एवं आर्यिकाश्री 105 सुयोगमति माताजी की

वर्षायोग स्थापना सन् 2020

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर परिसर

बाहुबली नगर, ललितपुर में सम्पन्न हुए कार्यक्रम की झलकियाँ

रजि. क्र. MPHIN/2007/27127

ललितपुर क्षे. में नवनिर्मित जिनालयों का अवलोकन करते हुए आ.श्री. आर्जवसागरजी ससंघ।

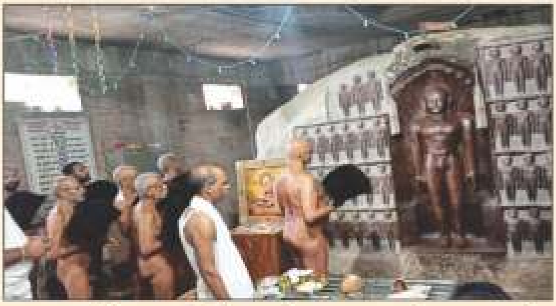

ललितपुर क्षे. में गुफास्थित भ.पार्श्वनाथ का दर्शन करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ।

ललितपुर वर्षायोग स्थापना पर आ.श्री आर्जवसागरजी का पाद प्रक्षालन करते हुए अध्यक्ष अनिल अंचल आदि।

ललितपुर वर्षायोग स्थापना पर शास्त्र दान करते हुए भक्तगण।

ललितपुर क्षेत्रपाल वर्षायोग स्थापना 2020 में उपस्थित भक्तगण।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन मो.:9826240876 द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, साईंबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 7222963457, 9425601161